दैनिक
बढ़ता राजस्थान
संस्करण:टोंक,जयपुर, अलवर एवं कोटा
• Since : 2004
/// कदम बढ़ाये, सच के साथ ///
वर्ष : 12 | अंक : 282 टोंक | शनिवार,28 जून, 2025 | आषाढ़, शुक्ल पक्ष तृतीया संवत्-2082 |भारत सरकार से विज्ञापनों के लिए स्वीकृत | RNI NO. RAJHIN/2013/52026 | मूल्य : ₹ 4.00 | पृष्ठ : 08

सड़क सुरक्षा समिति एवं रोड़ सेफ्टी टास्क फोर्स की बैठक का आयोजन

सड़क हादसों को रोकने के लिए सुरक्षा मानकों की पालना सुनिश्चित करें : कल्पना अग्रवाल

. बढ़ता राजस्थान

टोंक (का.स.)। कलेक्ट्रेट सभागार में शुक्रवार को जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में जिला सड़क सुरक्षा समिति एवं रोड़ सेफ्टी टास्क फोर्स की बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में जिला कलेक्टर ने अधिकारियों को सड़क हादसों को रोकने के सड़क सुरक्षा मानकों की पालना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इसके लिए सभी अधिकारी आपसी समन्वय बनाकर कार्य करें। जिला कलेक्टर ने जिले के प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग पर ब्लैक स्पॉट की जानकारी ली और इनमें आवश्यक रोड़ सेफ्टी के कार्य करने के लिए एनएचएआई के अभियंताओं को निर्देशित किया। एनएचएआई के अभियंताओं ने बताया कि एनएच 52 गोपीपुरा, कुचलवाड़ा और सरोली के पास के कट को बंद कर दिया गया है। अभियंताओं ने नगर परिषद टोंक के पक्का बंधा क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग पर अतिक्रमण हटाने के लिए पुलिस जाप्ता उपलब्ध कराने की बात कही। इस पर जिला कलेक्टर ने एएसपी गीता चौधरी को नियत दिवस पर जाप्ता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने हाईवे पर पशुओं के जमावड़े से होने वाले हादसों को गंभीरता से लेते हुए एनएचएआई और डीटीओं को अभियान चलाकर हाईवे से सटे हुए गांवों के पशुओं के रिफ्लेक्टर लगाने पर जोर दिया। उन्होंने राष्ट्रीय राजमार्गों पर दुर्घटना होने पर एनएचएआई की एंबुलेंस में आपातकालीन मेडिकल संसाधन की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। आगामी मीटिंग में इस संबंध में एंबुलेंस की उपयोगिता का डेटा प्रस्तुत करने के लिए कहा। जिला कलेक्टर ने डीटीओ संपतराम वर्मा को ओवरलोडिंग वाहनों पर अधिकतम चालान करने के निर्देश दिए। उन्होंने निवाई अधिशासी अधिकारी मनोहर लाल जाट को कहा कि झिलाई पुल से पहले हाईवे के पास हो रहे कचरे की डंपिंग की सफाई कराने तथा वहां कचरा डालने वालों के विरूद्ध पेनल्टी लगाएं। साथ ही, उसकी फेसिंग कराने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि स्कूलों में रोड़ सेफ्टी क्लब बनाकर विद्यार्थियों में सड़क सुरक्षा को लेकर जागरूकता बढ़ाएं। इसमें ट्रेफिक पुलिस को स्कूलों में आमंत्रित करें। उन्होंने नगर परिषद टोंक क्षेत्र में सड़क से ऊंचे सीवरेज चैंबरों को सही करने के लिए आरयूआईडीपी के अधिशाषी अभियंता प्रियांशु विजय को निर्देशित किया। बैठक में सार्वजनिक निर्माण विभाग के एसई एचएल मीणा, विद्युत विभाग के एसई केएल पटेल, आरएसआरडीसी के अधिकारी मौजूद रहे।

बोर्ड ऑफ विजिटर्स ने जिला कारागृह का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का लिया जायजा

बढ़ता राजस्थान

सवाई माधोपुर (राकेश शर्मा)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (जिला एवं सेशन न्यायाधीश) अध्यक्ष देवेंद्र दीक्षित की अध्यक्षता में बोर्ड ऑफ विजिटर्स ने शुक्रवार को जिला कारागृह सवाई माधोपुर का त्रैमासिक निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान कुल 103 बंदी उपस्थित मिले !देवेंद्र दीक्षित अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सवाई माधोपुर एवं बोर्ड ऑफ विजिटर्स द्वारा बंदियों से वार्ता कर जाति या धार्मिक आधार पर रसोईघर या भोजन पकाने का प्रबंधन, जाति या धार्मिक आधार पर बंदियों को दिया जाने वाला विशेष उपचार एवं बंदियों के समूह का वर्गीकरण, जेल के अंदर पंजीकृत विचाराधीन या दोषी बंदियों से संबंधित रजिस्टर में जाति का कॉलम तथा जाति, लिंग व विकलांगता के आधार पर बंदियों के साथ भेदभाव आदि के संबंध में पूछताछ कर उनकी समस्याओं को सुना गया । निरीक्षण के दौरान जिला कारागृह में जाति या धार्मिक आधार पर बंदियों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना पाया गया । साथ ही बोर्ड का विजिटर्स द्वारा मौके पर उपस्थित उपाधीक्षक जिला कारागृह महावीर प्रसाद मीणा से जिला कारागृह की भौतिक संरचना, नए प्रवेश करने वाले बंदियों के नाम एवं पता, उनके मुकदमों, संबंधित थाना एवं न्यायालय आदि के संबंध में पूछताछ की गई । साथ ही प्रिजन लीगल एड क्लीनिक के माध्यम से बंदियों को प्राप्त विधिक सहायता तथा जेल विजिटिंग लॉयर एवं जेल विजिटिंग अधिकार मित्र द्वारा की गई कार्यवाही, बंदियों को प्रदान की जाने वाली भोजन, पेयजल एवं चिकित्सकीय सुविधाओं आदि के संबंध में पूछताछ की गई। दौराने निरीक्षण बोर्ड ऑफ विजिटर्स के सदस्यों में सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (लिंक अधिकारी) आशुतोष सिंह आढ़ा, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी अनिल जैमिनी, अधिशासी अभियन्ता लोक निर्माण विभाग गोविंद सहाय मीणा, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) हरकेश मीना, संयुक्त निदेशक कृषि विस्तार कमल पहाड़िया तथा उपनिदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग मीना आर्य उपस्थित रहे। साथ ही चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल राधेश्याम जोगी, डॉ मनोज गर्ग एवं जेल स्टाफ भी निरीक्षण के दौरान उपस्थित रहे।

भारत विकास परिषद ने संस्थापक की जयन्ती गौ माता की सेवा के साथ मनाई

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (कृष्णचन्द्र विजय)। भारत विकास परिषद मालपुरा ने परिषद के संस्थापक राष्ट्रीय महासचिव डॉ. सूरजप्रकाश की 105वीं जयन्ती सरदरपुरा रोड स्थित गोपाल गोशाला की गौ माता की सेवा कर मनाई। इस मौके पर शुक्रवार को गोशाला परिसर में परिषद की बैठक अध्यक्ष ज्ञानचन्द जैन टोरड़ी वालो की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिसमें परिषद के अरविन्द टेलर ने डॉ. सूरजप्रकाश की जीवनी पर प्रकाश डाला। साथ ही परिषद की स्थापना को लेकर उनके योगदान के बारे में जानकारी दी। अंत में मौजुद सदस्यो ने गौ माता को चारा व गुड़ खिलाकर गौ माता की सेवा की। इस मौके पर कार्यक्रम संयोजक वैद्य कृष्णगोपाल शर्मा, वित्त सचिव सुनील परतानी, त्रिलोक चन्द विजय, प्रवक्ता दिनेश विजय, सत्यनारायण सोनी, शशिकांत पाठक, रामबाबू विजय, सुभाष सोनी, चेतन शर्मा, अभिषेक टेलर, अशोक साहू, ओमप्रकाश जैन, कनिल देव शर्मा, ज्ञानचन्द जैन, ठेडाणी वाले सहित अन्य सदस्य मौजुद रहे।

रक्तदान शिविर आज,पोस्टर का विमोचन किया

मालपुरा । मालपुरा के राज दंत चिकित्सा केन्द्र व एक्यूप्रेशर चिकित्सा केन्द्र पर शनिवार को विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर को लेकर शुक्रवार को आयोजन स्थल पर पोसटर का विमोचन किया गया। इस मौके पर जर्नलिस्ट एसोशियसन की मालपुरा शाखा के अध्यक्ष त्रिलोकचन्द जैन, जर्नलिस्ट एसोशियसन के जिला प्रतिनिधि रामजीलाल विजय रोटरी क्लब के सहायक प्रान्तपाल व जिला आयोजना समिति सदस्य डॉ. अकिंत जैन, रोटरी क्लब मालपुरा ग्रीन के अध्यक्ष रहे पवन जैन संगम, एक्यूप्रेशर चिकित्सक डॉ. राजकुमार वर्मा, सहित अन्य मौजुद रहे।

विभागीय समन्वय से करें विकास कार्यो एवं योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन : कानाराम

सवाई माधोपुर (नि.स.)। शिक्षा, चिकित्सा, महिला एवं बाल विकास से संबंधित विभागों की समन्वयात्मक समीक्षा बैठक शुक्रवार को जिला कलक्टर काना राम की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई। बैठक में फ्लैगशिप योजनाओं, बजट घोषणाओं एवं अन्तर विभागीय मुद्दों तथा विकास कार्यों की प्रगति की गहन समीक्षा की गई। जिला कलक्टर ने कहा कि सभी विभागीय आपसी समन्वय से केन्द्र तथा राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं से आमजन को अधिक का अधिक लाभांवित करने एवं जिले के विकास कार्यो को गति प्रदान करने हेतु समर्पित भाव से कार्य करें। उन्होंने चिकित्सा विभाग की प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन योजना की समीक्षा कर जिले में टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत टीबी रोगियों की पहचान करने हेतु स्थापित मशीनों का 24 घण्टे संचालित कर नार्ड टेस्ट और चेस्ट एक्स-रे की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले को टीबी मुक्त बनाने हेतु युद्ध स्तर पर विशेष अभियान चलाने के निर्देश सीएमएचओं डॉ. अनिल कुमार जैमिनी को दिए।

बजरी से भरे वाहन ने सड़क पर बैठी गौ माता के मारी टक्कर

रामनारायण गौशाला के गौसेवक मौके पर पहुंच कर घायल गौ माता के उपचार की व्यवस्था की

एक गौ माता की हुई मृत्यु दो हुई गंभीर घायल

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (कृष्णचन्द्र विजय)। मालपुरा दूदू स्टेट हाइवे पर गणवर गांव के नजदीक एक बजरी से भरे वाहन ने सड़क पर बैठी गो माता के टक्कर मारने से एक गौ माता की मृत्यु व दो गौ माता गंभीर रूप से घायल हो गई। मामले के अनुसार गणवर गांव के नजदीक कुछ गौ माताऐं मुख्य सड़क पर बैठी हुई थी। वहीं बजरी से भरा एक वाहन तेजी से गौ माता के ऊपर से ही गुजर गया। इससे एक गौ माता की मौके पर ही मृत्यु हो गई तथा दो गौ माताएं गंभीर रूप से घायल हो गई। मामले की जानकारी लगते ही ग्रामीण सड़क पर एकत्रित होकर विरोध प्रदर्शन कर सड़क पर यातायात अवरूद्ध कर दिया। जिसकी जानकारी लगते ही मालपुरा पुलिस मौके पर पहुंच कर गुस्साए ग्रामीणो को समझा कर सड़क से हटा कर आवागमन सुचारू किया। इधर घटना की जानकारी मिलते ही मालपुरा में संचालित श्री रामनारायण गौशाला के गौसेवक मौके पर पहुंच कर घायल गौ माता के इलाज की व्यवस्था की।

'बोल सवाई माधोपुर' समर कैंप का सफल समापन, अंग्रेजी भाषा कौशल विकास की अभिनव पहल बनी प्रेरणा स्रोत

बढ़ता राजस्थान

सवाई माधोपुर (राकेश शर्मा)। जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग सवाई माधोपुर की संयुक्त अभिनव पहल बोल सवाई माधोपुर समर कैंप का समापन समारोह राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, मानटाउन में मुख्य अतिथि जिला कलक्टर काना राम एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी गौरव बुड़ानिया की गरिमामय उपस्थिति में आयोजित हुआ। जिला कलक्टर काना राम ने इस अवसर पर बच्चों का उत्साहवर्धन कर संबोधित करते हुए कहा कि बोल सवाई माधोपुर जैसे प्रयास विद्यार्थियों को पारंपरिक शिक्षा से आगे बढ़ाते हुए व्यवहारिक और वैश्विक शैक्षणिक कौशल से जोड़ते हैं। उन्होंने बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि यह नवाचार जिले में ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के संचार कौशल, स्पोकन इंग्लिश एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में उच्च स्तर प्राप्त करने में सहयोगी सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन भविष्य में भी शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों को प्रोत्साहित करता रहेगा। शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना और उन्हें संवादात्मक अभ्यासों के माध्यम से इंग्लिश स्पीकिंग में दक्ष बनाना था। शिविर के दौरान मास्टर ट्रेनर्स द्वारा संवादात्मक गतिविधियों, रोल-प्ले, प्रजेंटेशन, वाचन, वार्तालाप अभ्यास जैसी रचनात्मक विधियों से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास और भाषा कौशल विकसित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एडीपीसी समग्र शिक्षा दिनेश कुमार गुप्ता एवं सह-संयोजक हेमराज मीना ने बताया कि यह शिविर विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने की दिशा में एक सफल प्रयास रहा।

42 वर्षों के इंतजार के बाद मुकेश चंद को मिला आवासीय पट्टा

बढ़ता राजस्थान

सवाई माधोपुर (राकेश शर्मा)। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के अंतर्गत ग्राम पंचायत नींदड़दा में आयोजित जनकल्याण शिविर में वर्षों से आवासीय पट्टे की प्रतीक्षा कर रहे एक परिवार को उनका अधिकार प्राप्त हुआ। ग्राम बनोटा निवासी मुकेश चंद मीणा पुत्र हरिनारायण मीणा 42 वर्षों से आवासीय पट्टे के लिए प्रयासरत थे। शिविर में विकास अधिकारी जगदीश प्रसाद मीना एव नायब तहसीलदार विनोद शर्मा ने मुकेश चन्द मीना को प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना के तहत विधिवत रूप से आवासीय पट्टा सौंपा। पट्टा प्राप्त होते ही मुकेश मीणा एवं उनके परिवार की आंखों में खुशी के आंसू छलक आए। मुकेश मीणा ने कहा कि करीब 40-42 वर्षो के लंबे इंतजार के बाद प्राप्त स्वामित्व पट्टे के माध्यम से अब वे सरकारी योजनाओं, बैंक ऋण और विकास के अन्य अवसरों से जुड़ सकेगा। उन्होंने कहा कि आज हमें वास्तव में यह एहसास हुआ कि सरकार हमारी है और हमारी पीड़ा को समझती है।

पलिका ने 27 बीघा 3 बिस्वा भूमि को कराया अतिक्रमण से मुक्त

बढ़ता राजस्थान

मालपुरा (कृष्णचन्द्र विजय)। नगरपालिका मालपुरा प्रशासन ने पालिका क्षेत्र की सुई वालो की ढाणी में पालिका की लगभग 27 बीघा 03 बिस्वा भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराया। पालिका के प्रशासनिक अधिकारी जयनारायण जाट ने बताया कि पालिका अधिशासी अधिकारी अमित कुमार चौधरी के संज्ञान में सूई वालो की ढाणी में पालिका की काफी भूमि पर अतिक्रमण की जानकारी लाई गई। जिस पर ईओ चोधरी ने तुरन्त मौके पर पहुंच कर त्वरित कार्रवाई कर पालिका की भूमि को अतिक्रमण से मुक्त करव कर मौके पर पालिका की भूमि है सम्बन्धी बोर्ड लगाने के निर्देश प्रदान किए। ईओ चौधरी के आदेशो की पालना में गिरदावर रामसिंह, कस्बा पटवारी बद्री मुवाल, पटवारी ओमप्रकाश व पालिका जमादार राजेश व राजेन्द्र सहित अन्य पालिका सफाई कर्मचारियो व जेसीबी मशीन के साथ मौके पर पहुंच कर नाप करवाई गई। जिसमें खसरा नम्बर 3554 रकबा 8 बीघा 11 बिस्वा, खसरा नम्बर 3558 रकबा न बीघा 15 बिस्वा तथा खसरा नम्बर 3585 रकबा 5 बीघा 05 बिस्वा, खसरा नम्बर 3579 रकबा 6 बीघा 12 बिस्वा कुल चारो खसरो में 27 बीघा 03 बिस्वा भूमि पालिका की अतिक्रमण से मुक्त करवा कर चारो तरफ मिट्टी की डोल लगवाई गई।

इनका कहना है

इस बाबत मालपुरा उपखण्ड अधिकारी व पालिका ईओ का कार्य देख रहे अमित कुमार चौधरी ने बताया कि पालिका प्रशासन द्वारा अतिक्रमणो पर सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि सूई वालो की ढाणी में पालिका की 27 बीघा 03 बीघा भूमि को अतिक्रमण से मुक्त करवाया गया है। यह कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी। चौधरी ने बताया कि पालिका प्रशासन द्वारा शीघ्र ही केकड़ी रोड, अजमेर रोड, दूदू रोड, जयपुर रोड सहित अन्य स्थानो पर कार्रवाई कर पालिका भूमि को अतिक्रमण से मुक्त करवाया जाएगा। सम्पूर्ण मालपुरा को अतिक्रमण से मुक्त करवाने की मुहिम चल भी रही है ओर आगे भी जारी रहेगी।

सरकारी विद्यालय के भौतिक विकास के लिए जिला कलक्टर को दिया 6 लाख का चैक

बढ़ता राजस्थान

सवाई माधोपुर । जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में राजकीय विद्यालयों के भौतिक एवं शैक्षिक विकास के लिए जिले में संचालित अभिनव पहल 'भविष्य की उड़ान' से प्रेरित होकर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रामड़ी के भौतिक विकास हेतु ग्रामवासियों एवं भामाशाहों ने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। विद्यालय के आधारभूत ढांचे के सुदृढ़ीकरण हेतु ग्रामवासियों द्वारा 6 लाख रुपए की राशि एकत्र कर मुख्यमंत्री जनसहभागिता विद्यालय विकास योजना के अंतर्गत जमा की गई। विद्यालय के प्रधानाचार्य शिवचरण मीना एवं ग्राम प्रतिनिधियों द्वारा यह चेक जिला कलेक्टर कानाराम को मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद गौरव बुडानिया ,एडीपीसी समग्र शिक्षा दिनेश कुमार गुप्ता एवं जिला शिक्षा अधिकारी देवी लाल मीणा की उपस्थिति में सौंपा गया। शिक्षा में नवाचार की उड़ान कार्यक्रम में एडीपीसी समग्र शिक्षा दिनेश कुमार गुप्ता ने बताया कि भविष्य की उड़ान कार्यक्रम जिले में शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने की एक सशक्त पहल है। इसके माध्यम से विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार सुनिश्चित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि समाज की भागीदारी से सरकारी विद्यालयों में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

सम्पादकीय

युद्ध दो देशों में संघर्ष ही नहीं पारिस्थितिकी पर भी डालता है असर

देखा जाए तो आज दुनिया के हालात अच्छे नहीं कहे जा सकते। एक और युद्ध जैसे हालात बने हुए हैं तो दूसरी और दुनिया के देश आंतकवादी गतिविधियों से दोचार हो रहे हैं। बांग्लादेश का तक्ता पलट हमारे सामने है तो पाकिस्तान में औपचारिक रुप से सेना द्वारा सत्ता पर काबिज होने के समाचार देर सबेर आने ही है।

युद्ध केवल जन-धन हानि तक ही सीमित नहीं रहकर इसके साइड इफेक्ट जन-धन हानि से भी अति गंभीर होते हैं। युद्ध के चलते जिस तरह के गोला-बारुद और केमिकल युक्त बम, मिसाइलें और ना जाने क्या क्या का उपयोग होता है जो प्रकृति पर दूरगामी नकारात्मक असर छोड़ते हैं। आज भले ही इजरायल-ईरान युद्ध के बीच युद्धविराम हो गया हो और भारत पाक युद्धविराम की तरह इसका श्रेय भी डोनाल्ड ट्रम्प ले रहे हो पर युद्ध के दूरगामी दुष्परिणामों से आने वाली पीढ़ी और प्रकृति किसी को माफ करने वाली नहीं है। हालांकि इजरायल-युद्ध में दोनों देशों द्वारा ही अपनी अपनी जीत के दावें किये जा रहे हैं पर यह नहीं भूलना चाहिए कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता तो दूसरी और आज के समय में युद्ध किसी निर्णायक स्तर पर पहुंच ही जाये यह भी कहा जाना बेमानी होगा। इजरायल-ईरान युद्ध से पहले इजरायल-हमास युद्ध, भारत पाकिस्तान के बीच ऑपरेशन सिन्दूर और लंबे समय से लगातार चला आ रहा रुस-यूक्रेन युद्ध हमारे सामने हैं। आज चल रहे इन युद्धों में से किसी को भी निर्णायक स्तर पर पहुंचते हुए नहीं देखा जा सकता और आज के समय के इन युद्धों को निर्णायक स्तर पर ले जाने की बात करना भी बुद्धिमानी नहीं मानी जा सकती। आज का युद्ध कोई बच्चों का खेल नहीं है। यूक्रेन जैसा छोटा सा देश रुस जैसे बिग गन का पूरे साहस के साथ मुकाबला कर रहा है।

देखा जाए तो आज दुनिया के हालात अच्छे नहीं कहे जा सकते। एक और युद्ध जैसे हालात बने हुए हैं तो दूसरी और दुनिया के देश आंतकवादी गतिविधियों से दोचार हो रहे हैं।

बांग्लादेश का तक्ता पलट हमारे सामने है तो पाकिस्तान में औपचारिक रुप से सेना द्वारा सत्ता पर काबिज होने के समाचार देर सबेर आने ही है। अमेरिका में दूसरे देशों से शरणार्थी के रुप में आये लोग आये दिन नाक में दम कर रहे हैं। यूरोपीय देश खासतौर से फ्रांस इसका भुक्तभोगी रह चुका है। देखा जाए तो दुनिया के अधिकांश देश अशांति के हालात से दो चार हो रहे हैं।

युद्ध चाहे आज के जमाने का हो या पुराने जमाने का अपने निशान धरती पर लंबे समय तक के लिए छोड़ जाते हैं। यह कहना कि युद्ध इतिहास की बात रह जाता है, गलत होगा। यह विश्लेषण में युक्तिसंगत नहीं कहा जा सकता कि युद्ध के दौरान अमुख देश के इतने करोड़ रुपए प्रतिदिन खर्च हो रहे थे या युद्ध के कारण जनहानि के साथ ही करोड़ों की संपत्ति और युद्ध सामग्री का नष्ट होना भी एक बात है।

आज का इतिहास
बढ़ता राजस्थान

28 जून की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- 1245 ल्योन की पहली परिषद (13वीं विश्वव्यापी परिषद) शुरू।
- 1461 एडवर्ड चतुर्थ को इंग्लैंड का राजा घोषित, पहला यॉर्किस्ट राजा, जिनका शासनकाल रोज़ेज़ के युद्धों से प्रभावित।
- 1485 जेंट, ब्रुग, और इपर ने मैक्सिमिलियन को नीदरलैंड का रीजेंट माना।
- 1519 स्पेन के राजा कार्लोस प्रथम को पवित्र रोमन सम्राट चार्ल्स पंचम चुना गया।
- 1524 चार्ल्स तृतीय, ड्यूक ऑफ बॉर्बन ने प्रोवेंस पर कब्जा किया।
- 1575 स्पेनिश सैनिकों ने बुरेन पर विजय प्राप्त की।
- 1629 एलेस की शांति फ्रांसीसी हुगुएनोट्स के अधिकार सीमित।
- 1635 ग्वाडेलूप में फ्रांसीसी कॉलोनी की स्थापना।
- 1651 बेरेस्टेज़्को की लड़ाइ-पोलिश और यूक्रेनी सेनाओं के बीच युद्ध शुरू।
- 1672 लुईस डे बुआडे डे फ्रोंटेनाक न्यू फ्रांस के लिए रवाना।
- 1675 फेहरबेलिन की लड़ाई ब्रैंडेनबर्ग-प्रशिया ने स्वीडन को हराया।
- 1675 किंग फिलिप युद्ध औपनिवेशिक मिलिशिया ने वैम्पानाग बस्ती को नष्ट किया।
- 1691 क्यूनियो की घेराबंदी फ्रांसीसी हार, ड्यूक ऑफ सेवॉय की जीत।
- 1748 एम्स्टर्डम में सार्वजनिक फांसी के विरोध में दंगे, 200 से अधिक लोग मारे गए।
- 1762 रूसी ज़ारिना कैथरीन द ग्रेट ने सत्ता हासिल की।
- 1770 क्वेकर्स ने फिलाडेल्फिया में अश्वेतों के लिए स्कूल खोला।
- 1776 चार्ल्सटन, दक्षिण कैरोलिना ने ब्रिटिश समुद्री हमले को विफल किया।
- 1776 स्वतंत्रता की घोषणा का अंतिम मसौदा महाद्वीपीय कांग्रेस को सौंपा गया।
- 1778 मोनमाउथ की लड़ाई - जनरल वाशिंगटन ने क्लिंटन को हराया।
- 1778 मैरी लुडविग हेस मॉली पिचर ने अमेरिकी सैनिकों की सहायता की।
- 1807 ब्रिटिश सेना अर्जेंटीना के एन्सेनाडा में उतरी।
- 1820 कर्नल रॉबर्ट गिब्बन ने टमाटर को गैर-विषैली सब्जी साबित किया।
- 1832 गेरिट मोल ने बंदूकों की आवाज मापी।
- 1833 पेरिस इवेंजेलिकल मिशनरी सोसाइटी को बसुटोलैंड में मिशन स्टेशन की अनुमति।
- 1838 महारानी विक्टोरिया का वेस्टमिंस्टर एब्बे में राज्याभिषेक।
- 1841 बैले गिजेल का पेरिस में प्रीमियर।
- 1846 एडोल्फ सैक्स ने सैक्सोफोन का पेटेंट कराया।
- 1855 मियामी विश्वविद्यालय में सिग्मा ची बिरादरी की स्थापना।
- 1859 न्यूकैसल अपॉन टाइन में पहला डॉग शो आयोजित।
- 1861 लीपज़िग वेधशाला ने धूमकेतु डी'अरेस्ट की खोज की।
- 1862 सैवेज स्टेशन की लड़ाई, सात दिवसीय युद्ध का हिस्सा।
- 1863 डोनाल्डसनविले की दूसरी लड़ाई संघ बलों ने कॉन्फेडरेट हमले को विफल किया।
- 1865 पोटोमैक की सेना भंग।

विशेष आलेख

(28 जून प्रेस सेंसरशिप डे)

आपातकाल में प्रेस सेंसरशिप के जरिए मीडिया का गला घोटा गया

डॉ. आशीष वशिष्ठ

इस तरह की सेंसरशिप के खिलाफ सीमित ही सही, अपने-अपने ढंग से प्रतिरोध भी हुआ। सेंसरशिप के विरोध में 28 जून को इंडियन एक्सप्रेस, स्टेट्समैन और नई दुनिया जैसे अखबारों और हिम्मत पत्रिका ने सम्पादकीय की जगह को खाली यानी ब्लैंक स्पेस (खाली जगह) छोड़ दिया था। यह आपातकाल और सेंसरशिप के विरोध का ही एक तरीका था। बाद में सरकार ने पत्र-पत्रिकाओं में 'ब्लैंक स्पेस' छोड़ने पर भी पाबंदी लगा दी थी। एक अखबार ने सेंसरशिप की आंखों से बचकर शोक संदेश के कॉलम में छापा-'आजादी की मां और स्वतंत्रता की बेटी लोकतंत्र की 26 जून, 1975 को मृत्यु हो गई।'

25 जून 1975 की वो तारीख जब आधी रात को देश में आपातकाल की घोषणा की गई। देश में आपातकाल लग चुका है इसका ऐलान खुद प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने रेडियो पर किया। आपातकाल की घोषणा के दो दिन के भीतर ही राजनीतिक विरोधियों और आंदोलनकारियों की गतिविधियों पर तो पहरा बिठा ही दिया गया। इस अवधि के दौरान मानवाधिकारों के उल्लंघन की रिपोर्ट व्यापक रूप से प्रसारित और बहस की गई हैं, लेकिन इस अवधि का सबसे महत्वपूर्ण पहलू प्रेस पर सेंसरशिप थी। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार ने मीडिया पर शिकंजा कसा और प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाने के लिए सभी प्रयास किए।

उस दौरान लोगों तक सूचना पहुंचाने का एकमात्र स्रोत अखबार और रेडियो हुआ करते थे। आपातकाल स्वतंत्र प्रेस के लिए उस वक्त का कोरोना काल साबित हुआ। उस दौर में प्रमुख अखबारों के कार्यालय दिल्ली के जिस बहादुर शाह जफर मार्ग पर थे, वहां की बिजली लाइन काट दी गई, ताकि अगले दिन के अखबार प्रकाशित नहीं हो सकें। जो अखबार छप भी गए, उनके बंडल जब्त कर लिए गए। हॉकरों से अखबार छीन लिए गए। 28 जून 1975 को भारत में आपातकाल के दौरान सरकार विरोधी प्रदर्शनों की पृष्ठभूमि में केंद्र ने स्वतंत्रता के बाद मीडिया पर भी सबसे कठोर प्रेस सेंसरशिप लागू किया।

इस तरह की सेंसरशिप के खिलाफ सीमित ही सही, अपने-अपने ढंग से प्रतिरोध भी हुआ। सेंसरशिप के विरोध में 28 जून को इंडियन एक्सप्रेस, स्टेट्समैन और नई दुनिया जैसे अखबारों और हिम्मत पत्रिका ने सम्पादकीय की जगह को खाली यानी ब्लैंक स्पेस (खाली जगह) छोड़ दिया था। यह आपातकाल और सेंसरशिप के विरोध का ही एक तरीका था। बाद में सरकार ने पत्र-पत्रिकाओं में 'ब्लैंक स्पेस' छोड़ने पर भी पाबंदी लगा दी थी। एक अखबार ने सेंसरशिप की आंखों से बचकर शोक संदेश के कॉलम में छापा-'आजादी की मां और स्वतंत्रता की बेटी लोकतंत्र की 26 जून, 1975 को मृत्यु हो गई।'

आपातकाल से जुड़ी खबरें सामने न आने पाए इसके लिए इंदिरा गांधी की सरकार ने कई तरह के उपाय किए थे। इनमें से एक अखबारों की बिजली काट देना। इसके पीछे की सोच यह थी कि जब बिजली ही नहीं रहेगी तो मशीने नहीं चल पाएंगी। जब मशीनें नहीं चल पाएंगी तो अखबार कैसे छपेगा। दिल्ली में बहादुर शाह जफर रोड पर अधिकांश अखबारों के दफ्तर हैं। ऐसे में दिल्ली में सरकार ने इस रोड पर स्थिति अखबारों के दफ्तरों की बिजली काट दी थी। इसके अलावा सरकार ने अखबारों और पत्रिकाओं को आर्थिक रूप से नुकसान पहुंचाने के लिए उनको मिलने वाले सरकारी विज्ञापनों पर रोक लगा दी थी। न्यूज पेपर के ऑफिस में अधिकारियों की तैनाती कर दी गई। उनकी बिना इजाजत राजनीतिक खबरों को छापने की मंजूरी नहीं थी।

आपातकाल के दौरान 3801 समाचार-पत्रों के डिक्लेरेशन जब्त कर लिए गए। 327 पत्रकारों को मीसा में बंद कर दिया गया और 290 अखबारों के विज्ञापन बंद कर दिए गए। 50 से अधिक पत्रकारों और कैमरामैन की मान्यता रद्द कर दी गई। हालात इस कदर बिगड़े कि टाइम और गार्जियन अखबारों के समाचार-प्रतिनिधियों को भारत से जाने के लिए कह दिया गया। रॉयटर सहित अन्य एजेंसियों के टेलेक्स और टेलीफोन काट दिए गए। सरकार की ओर से दिए गए आदेश के मुताबिक काम करने से मना करने पर पत्रकारों को जेल में भेजा जाने लगा था। जिन पत्रकारों को गिरफ्तार किया गया था उनमें मशहूर पत्रकार कुलदीप नैयर और केआर मलकानी शामिल थे। इसके अलावा महात्मा गांधी के पौत्र राजमोहन गांधी के नेतृत्व में निकलने वाली साप्ताहिक पत्रिका %हिम्मत% को कुछ आपत्तिजनक खबरें प्रकाशित करने के आरोप में जुर्माना लगाया गया था।

सरकार की ओर से प्रेस के लिए दिशानिर्देश जारी कर दिए गए थे। अफवाहों और आपत्तिजनक खबर को छापने की सख्त मनाही थी, जो सरकार के खिलाफ विपक्ष को भड़का सकता था। ऐसे सभी कार्टूनों, तस्वीरों और विज्ञापनों को पहले सेंसरशिप के लिए सौंपना पड़ता था, जो सेंसरशिप के दायरे में आते थे। अधिकारियों को न्यूज एजेंसियों के दफ्तरों में तैनात कर दिया गया था, ताकि ये आपत्तिजनक खबरों को उनके स्रोत पर ही दबा दें। विदेशी न्यूज एजेंसियों की आने वाली कॉपी को जांच की जाती थी। जब इंद्र कुमार गुजराल सरकार के मनोनुकूल मीडिया को नियंत्रित नहीं कर पाए तो आपातकाल के शुरुआती दिनों में उन्हें हटा कर विद्याचरण शुक्ल को नया सूचना एवं प्रसारण मंत्री बनाया गया। प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया भंग कर दिया गया। इतना ही नहीं आयकर, बिजली, नगरपालिका के बकाये की आड़ में अखबारों पर छापे डाले गए। बैंकों को कर्ज देने से रोका गया।

इनसाइड स्टोरी ऑफ इमरजेंसी में वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैयर लिखते हैं- आपातकाल के दौरान दिल्ली के संपादकों की एक बैठक बुलाई और उन्हें कड़े शब्दों में कह दिया गया था कि सरकार कभी बकवास बर्दाश्त नहीं करेगी। यह सरकार रहेगी और राज करेगी। किसी संपादकीय, लेख या कहीं और खाली जगह को भी विरोध माना जाएगा। बता दें यह तरीका अंग्रेजी राज में सेंसरशिप का विरोध करने के लिए भारतीय अखबार आमतौर पर अपनाते थे। सेंसरशिप के कारण जेपी सहित अन्य कौन-कौन नेता कब गिरफ्तार हुए, उन्हें किन-किन जेलों में रखा गया, ये खबरें समाचार पत्रों को छापने नहीं दी गईं।

आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंसः राजनाथ सिंह की हुंकार - झुकेगा नहीं भारत

प्रो. आरके जैन

शांति, सुरक्षा और विश्वास की कमी सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। इनका मूल कारण कट्टरवाद, उग्रवाद और आतंकवाद है। यह बयान आतंकवाद को एक वैश्विक खतरे के रूप में रेखांकित करता है और उन देशों पर कटाक्ष करता है जो इसे अपनी नीति का हथियार बनाते हैं। बिना नाम लिए, उन्होंने पाकिस्तान की ओर इशारा करते हुए कहा, कुछ देश सीमा पार आतंकवाद को अपनी नीति के साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं

राजनाथ सिंह ने अपने संबोधन में आतंकवाद को वैश्विक शांति और सुरक्षा का सबसे बड़ा शत्रु करार दिया। उन्होंने कहा, हमारे क्षेत्र में

जब विश्व मंच पर सत्य की गूंज उठती है और साहस की हुंकार न केवल आकाश को चीरती है, बल्कि इतिहास के पन्नों को अमर कर देती है, तब एक नया युग जन्म लेता है। 26 जून 2025 को चीन के किंगदाओ में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की रक्षा मंत्रियों की बैठक में भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ऐसा ही एक स्वर्णिम क्षण रचा। उन्होंने संयुक्त बयान पर हस्ताक्षर करने से स्पष्ट इनकार कर दिया, क्योंकि उसमें जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को हुए आतंकी हमले का कोई जिक्र नहीं था, जिसमें 26 लोग मारे गए थे, जिनमें एक नेपाली नागरिक भी शामिल था। इस हमले की जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े आतंकी संगठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' ने ली थी। इसके विपरीत, बयान में बलूचिस्तान का उल्लेख था, जिसे भारत पर परोक्ष रूप से आरोप लगाने की साजिश के तहत शामिल किया गया था। राजनाथ सिंह के इस साहसिक कदम ने न केवल पाकिस्तान और चीन की दोहरी नीतियों को नंगे सत्य के सामने ला खड़ा किया, बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि भारत अब वैश्विक मंचों पर न झुकता है, न चुप रहता है। यह क्षण भारत की कूटनीतिक शक्ति और आतंकवाद के खिलाफ उसकी अटल प्रतिबद्धता का प्रतीक बन गया, जो विश्व को यह संदेश देता है कि भारत अब अपनी शर्तों पर इतिहास लिखता है।

राजनाथ सिंह ने अपने संबोधन में आतंकवाद को वैश्विक शांति और सुरक्षा का सबसे बड़ा शत्रु करार दिया। उन्होंने कहा, हमारे क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और विश्वास की कमी सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। इनका मूल कारण कट्टरवाद, उग्रवाद और आतंकवाद है। यह बयान आतंकवाद को एक वैश्विक खतरे के रूप में रेखांकित करता है और उन देशों पर कटाक्ष करता है जो इसे अपनी नीति का हथियार बनाते हैं। बिना नाम लिए, उन्होंने पाकिस्तान की ओर इशारा करते हुए कहा, कुछ देश सीमा पार आतंकवाद को अपनी नीति के साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं और आतंकवादियों को पनाह देते हैं। ऐसे दोहरे मानदंड अस्वीकार्य हैं। यह बयान न केवल पाकिस्तान की नीतियों को उजागर करता है, बल्कि एससीओ जैसे मंचों पर उसकी विश्वसनीयता को चुनौती देता है। पहलगाम हमले का जिक्र करते हुए राजनाथ सिंह ने बताया कि इसमें पीड़ितों को उनकी धार्मिक पहचान के आधार पर निशाना बनाया गया, जो लश्कर-ए-तैयबा के पुराने पैटर्न से मेल खाता है। इस हमले के जवाब में भारत ने 7 मई 2025 को 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया, जिसमें पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में नौ आतंकी ठिकानों पर लक्षित हवाई हमले किए गए। इस ऑपरेशन ने भारत की आतंकवाद के खिलाफ सक्रिय और आक्रामक रणनीति को प्रदर्शित किया, साथ ही यह संदेश दिया कि आतंकवाद के गढ़ अब सुरक्षित नहीं हैं।

शख्सियत
बढ़ता राजस्थान

शख्सियत
नेकीराम
(सेवानिवृत जिला शिक्षाधिकारी)

नमस्कार साथियों हमारी आज की शख्सियत कॉलम के स्टार हैं नेकी राम जी जोकि जैसलमेर जिला शिक्षाअधिकारी पद से सेवानिवृत हुए हैं। 2 फरवरी सन 1965 को ग्राम माजरी खुर्द, पोस्ट माजरी कलॉ तहसील नीमराणा (हरियाणा बार्डर से लगा हुआ दूरस्थ अभाव ग्रस्तगांव जहाँ बिजली भी 2001 में आई) वहां पैदा हुए हैं। शिक्षा प्राथमिक विद्यालय माजरी खुर्द,माध्यमिक स्तर रामावि माजरी कलॉ 1980, उच्च माध्यमिक स्तर उमावि बहरोड से हुई उसके बाद स्नातक स्तर राजर्षि महाविद्यालय अलवर विज्ञान वर्ग शिक्षा स्नातक जैन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय अलवर 1987 को हुआ उसके बाद स्नातकोत्तर सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय ब्यावर अजमेर से रसायन शास्त्र। शिक्षा स्नातकोतर 1995 में राजकीय सेवा में रहते हुए हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय। हिमाचल प्रदेश से अर्जित की प्रथम नियुक्ति वरिष्ठ अध्यापक 20 अक्टूंबर सन 1989 में अजमेर से व्याख्याता रसायनशास्त्र के पद पर राजस्थान लोक सेवा आयोग से चयन उपरांत श्री कर्ण नरेन्द्र रा उ मा वि जोबनेर में पदस्थापन हुए। 95 से सेठ चन्दूलाल धन्नालाल रा उ मा वि बानसूर में 2000 तक रा उ मा वि माजरी कलॉ में 2001 से 2007 तक प्रधानाचार्य पर मोहनगढ जैसलमेर 2007-2009 रा उ मा वि मांढण अलवर, पनोरिया बाडमेर, दौलत सिंह पुरा नीमराणा अलवर, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक द्वितीय अलवर 2009 से 2013 तक, ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी बहरोड, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी पांचू बीकानेर, नीमराणा अलवर, जैसलमेर, जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय प्रारंभिक शिक्षा अलवर 19 अक्टूबर 2019 से जनवरी 2025 तक रहे। अतिरिक्त प्रभार जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा अलवर 10 अक्टूबर 22 से रहा। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी अलवर का अतिरिक्त प्रभार 3 बार रहा। तत्कालीन जिला कलेक्टर जितेंद्र सोनी द्वारा किए गए नवाचार अभियान उजास के तहत अलवर जिले की 437 विद्युत विहीन विद्यालय में विद्युत कनेक्शन करवाए गए। जहां स्कूलों में विद्युत कनेक्शन के बाद स्कूलों में नामांकन बढ़ा। हाल की में जैसलमेर जिले से सेवा निवृत हुए हैं। शानदार अधिकारी हैं नेकी राम जी। लोगों का भला करने में विश्वास रखने वाले अधिकारियों में इन्हें गिना जाता है। टीम बढ़ता राजस्थान टीम इनके उजवल भविष्य की कामना करती है। रूपक शर्मा

संस्मरण
बढ़ता राजस्थान

पाकिस्तान पर भारी पड़ गए थे फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ, नाराज होकर सेना में हुए थे भर्ती

पंजाब के अमृतसर में 03 अप्रैल 1914 में सैम मानेकशॉ का जन्म हुआ था। उन्होंने अपनी शुरूआती शिक्षा नैनीताल के शेरवुड कॉलेज से पूरी की थी। बाद में वह देहरादून के इंडियन मिलिटरी अकादमी में पढ़ाई करने लगे। हालांकि सैम इंग्लैंड जाकर पढ़ाई करना चाहते थे।भारतीय सेना में फील्ड मार्शल का पद पाने वाले सैम मानेकशॉ अपनी बहादुरी के किस्सों के लिए जाने जाते हैं। आज ही के दिन यानी की 27 जून को 94 साल की उम्र में सैम का निधन हो गया था। सैम मानेकशॉ अपनी बहादुरी और रण कौशल के लिए जाने जाते थे। वहीं उनके नेतृत्व में भारतीय सेना ने पाकिस्तान को युद्ध में धूल चटाई थी। वहीं फर्स्ट वर्ल्ड वॉर में भी सैम मानेकशॉ की अहम भूमिका थी। वह अपनी बहादुरी, जिंदादिली और हाजिरजवाबी के लिए भी जाने जाते थे। तो आइए जानते हैं उनकी डेथ एनिवर्सरी के मौके पर सैम मानेकशॉ के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

पंजाब के अमृतसर में 03 अप्रैल 1914 में सैम मानेकशॉ का जन्म हुआ था। उन्होंने अपनी शुरूआती शिक्षा नैनीताल के शेरवुड कॉलेज से पूरी की थी। बाद में वह देहरादून के इंडियन मिलिटरी अकादमी में पढ़ाई करने लगे। हालांकि सैम इंग्लैंड जाकर पढ़ाई करना चाहते थे। लेकिन उनके पिता ने इसकी इजाजत नहीं दी। ऐसे में सैम नाराज होकर सेना में भर्ती हो गए और सैम मानेकशॉ से सैम बहादुर बन गए।

साल 1934 में सैम मानेकशॉ ब्रिटिश इंडियन आर्मी में भर्ती हुए। वहीं सेकेंड वर्ल्ड वॉर के दौरान सैम मानेकशॉ ने बर्मा में अपनी सेवाएं दीं, जहां पर वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे। वहीं देश की आजादी के बाद वह भारतीय सेना में शामिल रहे और इस दौरान वह विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर भी कार्यरत रहे।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, आपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते वक्त सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारम्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताए और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष

उत्तम भोजन की प्राप्ति होगी। निर्धारित कार्यों में कम सफलता मिलेगी। आज आपकी वैचारिक समृद्धि बढ़ेगी। मीठी वाणी से आप लाभप्रद, सौहार्द्रपूर्ण संबंध विकसित कर सकेंगे। उत्तम भोजन, भेंट उपहारों और वस्त्रों की प्राप्ति होगी।

वृष

लंबी अवधि की आर्थिक योजना के लिए दिन अनुकूल है। आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से दिन लाभदायक होगा। शारीरिक और मानसिक स्फूर्ति और ताजगी का अनुभव होगा। मित्रों तथा स्वजनों की ओर से उपहार मिलेगा।

मिथुन

स्नेहीजनों एवं मित्रों से उपहार मिल सकता है। उच्च अधिकारियों की कृपादृष्टि बनी रहेगी। सांसारिक जीवन में आनंद का अनुभव करेंगे। कार्यक्षेत्र में उच्च अधिकारियों के खुश रहने से पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी।

कर्क

मानसिक दुविधा में होने के कारण आप महत्वपूर्ण निर्णय नहीं ले सकेंगे। पानी वाली जगहों तथा अन्य गर्म तरल पदार्थों से सावधान रहें। परिवार या जमीन से संबंधित मामलों पर चर्चा और कहीं जाने की योजना टालें। दुर्घटना से बचें। नए काम करने की प्रेरणा मिलेगी।

सिंह

परोपकार के लिए किए काम आपको आंतरिक खुशी देंगे। आज आपकी वाणी का जादू किसी को अभिभूत करके आपको लाभ दिलाएगा। वाणी की सौम्यता नए संबंध स्थापित करने में सहायक होगी।

कन्या

पठन-लेखन जैसी साहित्यिक प्रवृत्तियों में अभिरुचि बढ़ेगी। परिश्रम का अपेक्षित परिणाम नहीं मिलने से थोड़े निराश हो सकते हैं। विद्यार्थी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन कर सकेंगे। पेट की तकलीफ से परेशानी हो सकती है। सगे-संबंधियों के साथ अनबन होगा।

तुला

तुला राशि वालों के लिए कार्यक्षेत्र में आपकी साख बढ़ेगी और प्रभाव भी मजबूत होगा। एक के बाद एक समस्याएं सुलझेंगी जिससे आत्मबल में वृद्धि होगी। पेट और आंखों की समस्या से सतर्क रहें।

वृश्चिक

वाणी की शिथिलता के कारण उग्र तकरार हो सकती है। सगे-संबंधियों के साथ अनबन होगा। मनोरंजन या घूमने-फिरने के पीछे पैसे खर्च होंगे। शारीरिक, मानसिक व्यग्रता कम करने के लिए आध्यात्मिकता सहायक साबित होगी।

धनु

स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा। परिवार में आनंद का वातावरण रहेगा। पिता तथा सरकार से लाभ मिलेगा। आर्थिक योजना अच्छी तरह पूरी कर सकेंगे। व्यापार-धंधे के लिए प्रवास की संभावना है। अन्य लोगों की सहायता करने का प्रयत्न करेंगे।

मकर

पारिवारिक सदस्यों के साथ सुख-शांति में दिन व्यतीत होगा। उनका सहयोग मिलेगा। दूरस्थ मित्र और स्नेहीजनों के साथ संपर्क लाभदायक साबित होंगे। अपनी प्रभावशाली वाणी से अन्य लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकेंगे।

कुंभ

नौकरी-धंधे या व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति होगी। मित्रों के साथ मुलाकात, प्रवास का आयोजन होगा। विवाहोत्सुक युवक-युवतियों के लिए सुनहरे अवसर आएंगे। पुत्र तथा पत्नी से लाभ होगा। घर के बुजुर्गों के जरिए लाभ मिलेगा।

मीन

शारीरिक और मानसिक ताजगी के साथ घर में भी आनंद का वातावरण रहेगा। दोस्तों से लाभ होगा। कार्य सफलता और प्रिय व्यक्ति का साथ आनंदप्रद रहेगा। आर्थिक लाभ और भाग्य वृद्धि की संभावनाएं हैं। सगे-संबंधियों के साथ अनबन होगा।

एमडी चोपदार बने कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग राजस्थान के चेयरमैन

कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के चेयरमैन बने चौपदार

बढ़ता राजस्थान

जयपुर, (का.स.)। कांग्रेस पार्टी ने अल्पसंख्यक विभाग राजस्थान का चेयरमैन महबूब दीवान (एमडी) चोपदार को बनाया है। इस संदर्भ में कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव केसी वेणुगोपाल ने आदेश जारी कर मीडिया को जानकारी दी। वहीं एमडी चोपदार के अल्पसंख्यक विभाग राजस्थान के चेयरमैन बनने पर पार्टी के राष्ट्रीय एवं प्रदेश नेतृत्व ने इन्हें शुभकामनाएं देते हुए सकारात्मक संदेश दिया है। पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने चौपदार को बधाई देते हुए कहा कि उनका अनुभव, समर्पण और प्रतिबद्धता अल्पसंख्यक विभाग को नई ऊंचाईयों पर ले जाएगा। वहीं नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने नियुक्ति पर चौपदार को शुभकामनाएं दी हैं। साथ ही कहा कि हमें पूर्ण विश्वास है कि उनका अनुभव, समर्पण और संगठन के प्रति निष्ठा अल्पसंख्यक विभाग को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाएगा।वहीं पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा ने भी चौपदार को बधाई देते हुए कहा कि मेरा विश्वास है कि वह समर्पण के साथ अपने दायित्व का निर्वहन कर संगठन को मजबूत करेंगे। वहीं पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट ने भी उनको बधाई प्रेषित की है।

देर रात तक लगा रहा बधाई देने वालों का तांता

वहीं कांग्रेस विधायकों, सांसदों, संगठन पदाधिकारियों सहित विभिन्न जनप्रतिनिधियों, सेवाभावी लोगों एवं वरिष्ठजनों ने बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए इनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। इसी प्रकार एमडी चोपदार के वैशाली नगर जयपुर स्थित आवास पर बधाई देने वालों का तांता देर रात तक लगा रहा।

पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए योजनाओं के क्रियान्वयन की हो नियमित मॉनिटरिंग- खाद्य मंत्री गोदारा

खाद्य मंत्री सुमित गोदारा ने ली खाद्य विभाग के अधिकारियों की बैठक, वास्तविक पात्रों तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने के दिए निर्देश, गिव अप अभियान के तहत हटाई 96 हजार 369 यूनिट

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली(बिल्लूराम सैनी)। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता मामले विभाग के मंत्री सुमित गोदारा ने निर्देश दिए कि पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए योजनाओं के क्रियान्वयन की हर स्तर पर नियमित मॉनिटरिंग की जाए। मंत्री श्री गोदारा गुरुवार कलेक्ट्रेट सभागार में खाद्य विभाग के अधिकारियों के साथ विभागीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहें थे।

मंत्री श्री गोदारा ने गिव अप अभियान की विस्तार से समीक्षा कर अभियान के तहत अपात्र लाभार्थियों - जैसे आयकरदाता, राज्य एवं केंद्रीय सरकारी कर्मचारी, चारपहिया वाहनधारी एवं एक लाख से अधिक वार्षिक आय वाले परिवार द्वारा स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ त्यागने की उपखंडवार तुलनात्मक प्रगति पर चर्चा की गई। उन्होंने कहा कि दिनांक 31 अगस्त तक लक्ष्यानुरूप अपात्र व्यक्तियों द्वारा स्वेच्छा से योजना से बाहर होने के लिए उन्हें प्रेरित करें, इसके पश्चात अपात्रों से नियमानुसार कार्रवाई करें।उन्होंने जिले के निरीक्षकों को गिव अप अभियान के तहत उपखंडवार लक्ष्य आवंटित करते हुए क्रियान्विति सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने कहा कि इस कार्य में किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस अभियान को जनजागरूकता से जोड़ते हुए प्रत्येक ग्राम पंचायत एवं नगरीय क्षेत्र में व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए ताकि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशानुरूप अधिकाधिक अपात्र व्यक्ति स्वयं योजना से बाहर हों जिससे पात्र व्यक्तियों को लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि अधिकारी फील्ड में जाकर यह सुनिश्चित करें कि एनएफएसए का लाभ वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंचे। उन्होंने कहा कि सभी राशन की दुकानों पर प्रधानमन्त्री गरीब कल्याण अन्न योजना की जानकारी चस्पा करें।

आमजन की शिकायतों का हो त्वरित गुणवत्तापूर्ण निस्तारण

मंत्री ने कहा कि डीलरों और परिवहनकर्ताओं के भुगतान में अनावश्यक विलंब से वितरण प्रणाली प्रभावित होती है जिसे हर हाल में रोका जाना चाहिए। उन्हें अधिकारियों से कहा कि खाद्य सुरक्षा से जुड़ी योजनाएं सीधे आमजन के सीधे संबंधित हैं इनकी निगरानी एवं क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि आमजन की शिकायतों का शीघ्र नियमानुसार गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित करें।

स्वीकृत आवेदनों का जिलाधिकारियों द्वारा रेण्डमली सत्यापन कर अपात्र प्रविष्टियों की पहचान सुनिश्चित की जाए

इसके साथ ही वर्ष 2022 और 2025 के एनएफएसए पोर्टल पर लंबित आवेदनों के निस्तारण की वस्तुस्थिति की समीक्षा करते हुए उन्होंने निर्देश दिए कि सभी लंबित प्रकरणों की जांच रिपोर्ट समयबद्ध रूप से प्राप्त कर निस्तारण किया जाए। उन्होंने कहा कि स्वीकृत आवेदनों का जिला स्तरीय अधिकारियों द्वारा रेण्डमली सत्यापन किया जाए अपात्र प्रविष्टियों की समय रहते पहचान हो सके।मंत्री गोदारा ने खाद्य सुरक्षा योजना में हाल ही में जुड़े लाभार्थियों की आधार सीडिंग एवं ई-केवाईसी की प्रगति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देशित किया कि आधार लिंकिंग एवं ई-केवाईसी की प्रक्रिया को प्राथमिकता पर पूर्ण कराया जाए। उन्होंने कहा कि डिजिटल सत्यापन से ही योजनाओं की पारदर्शिता और लक्षित वितरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

कोटपूतली शहर की बदहाल सफाई व्यवस्था पर सवाल- कलेक्टर का दौरा क्या कुछ बदलेगा

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली(बिल्लूराम सैनी)। शहर इन दिनों बदइंतजामी और गंदगी की मार झेल रहा है। हर गली, हर नुक्कड़ और हर मोहल्ले में कूड़े-कचरे के ढेर, बजबजाते नाले और फैली दुर्गंध ने नागरिकों का जीना दूभर कर दिया है। नगर परिषद की लापरवाही और प्रशासन की निष्क्रियता ने हालात को इस कदर बिगाड़ दिया है कि अब लोग सवाल करने पर मजबूर हैं — आखिर इस शहर का जिम्मेदार कौन।जिला कलेक्टर प्रियंका गोस्वामी ने शहर का औचक निरीक्षण किया। नज़ारा देख उनका चेहरा गंभीरता और नाराज़गी से भर गया। उन्होंने जगह-जगह गंदगी, खुले में बहते नाले और लोगों की शिकायतें सुनकर मौके पर ही नगर परिषद अधिकारियों को फटकार लगाई। चतुर्भुज क्षेत्र में चल रहे सीवरेज प्लांट के कार्य की धीमी प्रगति और खराब गुणवत्ता पर भी उन्होंने सवाल उठाए। मगर यहां सबसे बड़ा सवाल यही है — क्या यह दौरा भी सिर्फ एक औपचारिकता बनकर रह जाएगा। याद दिला दें कि इससे पहले पूर्व कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने भी कई बार निरीक्षण किया था, सख्त निर्देश दिए थे, चेतावनियां भी दी थीं। लेकिन नतीजा सिफर रहा। स्थिति न बदली, नाला साफ हुआ, न व्यवस्था दुरुस्त हुई। हर बार प्रशासन जागता है, कैमरे चलते हैं, मीटिंग होती है — और फिर सब सो जाता है। जनता का सवाल वाजिब है क्या नई कलेक्टर भी वही पुराना रास्ता अपनाएंगी।क्या यह दौरा भी मीडिया की हेडलाइन और प्रेस विज्ञप्ति तक सीमित रह जाएगा।या इस बार कोई ठोस कदम उठाया जाएगा।नगर परिषद अध्यक्ष धर्मपाल जाट भी इस दौरे में मौजूद रहे, लेकिन अगर अब भी हालात नहीं सुधरे तो यह साफ संकेत होगा कि जिम्मेदार लोग सिर्फ औपचारिकता निभाने में व्यस्त हैं, न कि समस्याओं के समाधान में।अब वक्त है कि प्रशासन जागे।

जनता का सब्र टूट रहा है

अगर हालात नहीं बदले तो लोग न सिर्फ सवाल करेंगे, बल्कि हिसाब भी मांगेंगे और यह लोकतंत्र का सबसे मजबूत हथियार है।कोटपूतली को साफ-सुथरा और रहने लायक शहर बनाने की जिम्मेदारी अब प्रशासन और जनप्रतिनिधियों की परीक्षा बन चुकी है। अब यह दिखाना होगा कि वे सिर्फ पद पर बैठे नहीं हैं बल्कि ज़िम्मेदार भी हैं।

आमजन की शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता से करें, किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी- प्रियंका गोस्वामी

बढ़ता राजस्थान

कोटपूतली(बिल्लूराम सैनी)। जिला कलेक्टर प्रियंका गोस्वामी ने कहा कि आमजन से संबंधित लंबित परीवादों का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित करें, इस कार्य में किसी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जिला कलेक्टर विभागीय योजनाओं, प. दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविर प्रगति एवं संपर्क पोर्टल के लंबित परिवादों के संबंध में अधिकारियों की समीक्षा बैठक ले रही थी।

जिला कलेक्टर ने संपर्क पोर्टल, सीएमओ, जनसुनवाई, जनप्रतिनिधियों से प्राप्त आमजन के लंबित परीवादो की विभागवार समीक्षा करते हुए कहा कि परिवादो का त्वरित व गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित करें, उन्होंने कहा कि यह ध्यान रखें कि समाधान केवल औपचारिक न हो बल्कि संतुष्टिपूर्ण हो। उन्होंने कहा कि अधिकारी 30 दिन से अधिक समय से लंबित चल रहे परिवाद का निस्तारण कर उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करें एवं पोर्टल पर अपडेट भी करें।

शिविरों से अधिकाधिक ग्रामजन को करें लाभान्वित: जिला कलक्टर

जिला कलेक्टर ने प. दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा शिविर के बारे में अब तक हुई प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि सभी उपखंड अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि शिविरों के आयोजन और समय के बारे में समुचित प्रचार प्रसार हो। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि शिविर में आए लोगों को पात्रतानुसार लाभ दिलवाना सुनिश्चित करें और उन्हें योजनाओं की जानकारी सरल भाषा में दें। पोर्टल पर डाटा विहित समय में अपलोड करें और जिले की रैंक सुधारने के लिए आवश्यक प्रयास करें। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी संबंधित विभाग जिले की कार्ययोजना के अनुसार उन्हें आवंटित कार्य पूर्ण जिम्मेदारी से निष्पादित करें ताकि हर पात्र को लाभांवित करने की राज्य सरकार की मंशा साकार हो सके।

कल्पना और समर्पण का संगमः स्पेस पेंटिंग शुभांशु शुक्ला को समर्पित

बढ़ता राजस्थान

जयपुर, (का.स.)। कक्षा 4 में पढ़ने वाले मोनार्क कुमावत ने एक अनोखी अंतरिक्ष विषयक पेंटिंग बनाई है, जो खूब सराही जा रही है। इस पेंटिंग में एक अंतरिक्ष यात्री (एस्ट्रोनॉट) को ब्रह्मांड की गहराइयों में चाँद की ओर बढ़ते हुए दिखाया गया है। खास बात यह है कि यह कलाकृति मोनार्क ने शुभांशु शुक्ला को समर्पित की है — जो उनके लिए एक प्रेरणास्रोत हैं। चित्र में एक लाल रंग की सीढ़ी, ऊँचे भूरे पहाड़, गहरे नीले रंग का तारा-जड़ित आकाश और उसमें चढ़ता हुआ एक नन्हा अंतरिक्ष यात्री दर्शकों को किसी स्वप्नलोक में ले जाता है।

कार्यालय ग्राम पंचायत कलमण्डा प.स. मालपुरा - टोंक

क्रमांक:- पसमा/लेखा/2025-26/16 दिनांक:-26.6.2025

ई निविदा आमंत्रण सूचना

पंचायत समिति मालपुरा की अधीनस्थ ग्राम पंचायत कलमण्डा में महात्मा गांधी नरेगा योजना एवं ग्रामीण विकास पंचायती राज की विभिन्न योजनाओं में वर्ष 2025-26 में कराये जाने वाले निर्माण कार्यों पर निर्माण सामग्री आपूर्ति हैण्डपम्प/ट्युबवेल रिपेयरिंग पार्टस आपुर्ति अन्य कार्य एवं उपकरण किराये पर लेने हेतु वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम में पंजीकृत विक्रताओं/निविदा दाताओं से वार्षिक दर संविदा के लिए ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया में आनलाईन निविदाये दिनांक 27.6.2025 को प्रात: 10 बजे से दिनांक 7.7.2025 को सांय 6 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा सम्बन्धी विस्तृत जानकारी www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in अथवा संबंधित ग्राम पंचायत कार्यालय पर देखा जा सकता है।

NIBN code ZTN2526A0541
UBN Code ZTN2526GLOB00571

ग्राम पंचायत कलमण्डा
प.स.मालपुरा (टोंक)

प्रशासक ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत कलमण्डा प.स. मालपुरा

कार्यालय मेडिकेयर रिलिफ सोसायटी, राजकीय उप जिला चिकित्सालय, देवली (टोंक)

क्रमांक:- निविदा/स्टोर/2025-26/95 दिनांक:- 21.6.2025

वित्तीय वर्ष 2025-26 की शेष अवधि के लिए एलएलएफडी स्टोर/नि:शुल्क दवा वितरण केन्द्र हेतु लोकल परचेज के लिए ड्रग्स एवं इंजेक्टेबल सप्लाई कार्य हेतु पंजीकृत फर्मों से खुली प्रतियोगी बोली से निविदायें आमंत्रित की जाती है। जिसका विवरण निम्नानुसार है-

सेवा/कार्यका विवरण	अनुमानित लागत (रु.)	बोली प्रपत्र शुल्क राशि (रु.)	बोली प्रतिभुति राशि	निवदा विक्रय करने की अन्तिम दिनांक व समय	निविदा जमा कराने की अंतिम दिनांक व समय	निविदा (तकनीकी) खोलने की दिनांक व समय
ड्रग्स एवं इंजेक्टेबल स्पलाई कार्य	950000	500	19000	30.6.2025 प्रात: 11बजे	30.6.2025 दोपहर 1 बजे	30.6.2025 दोपहर 2 बजे

1. विस्तृत निविदा सूचना मय बोली दस्तावेज एमआरएस स्टोरकीपर से दिनांक 21 .6.2025 से प्रात: 9.00 बजे से दोपहर 2 बजे तक प्राप्त कर सकते हैं व राजस्थान राज्य लोक उपापन पोर्टल पर भी देखा जा सकता है।
2. निविदायें तकनीकी निविदा प्रपत्र तथा वित्तीय बोली प्रपत्र अलग-अलग लिफाफे में बन्द कर दोनों लिफाफों पर नामांकन (निविदा प्रपत्र या वित्तीय निविदा प्रपत्र) कर एक बडे लिफाफे में बन्द कर प्रस्तुत की जायेगी।
3. तकनीकी/क्वालिफाईड बिड दिनांक 30.6.2025 को दोपहर 2 बजे इस कार्यालय में उपस्थित बोलीदाता/संवेदक या उनके अधिकृत प्रतिनिधि के समक्ष उपापन समिति द्वारा खोली जायेगी व तकनीकी बोली में सफल बोलीदाता की ही वित्तीय बोली उसी दिन खोली जायेगी।
4. किसी भी निविदा/बोली को स्वीकार/अस्वीकार करने या किसी बोली को निरस्त कतरने की उपापन समिति का सर्वाधिकार सुरक्षित है। ऐसा करने के कारण लेखबद्ध किये जाएंगे।

सदस्य सचिव
मेडिकेयर रिलिफ सोसायटी,
राज.उप जिला चिकि,देवली

राजस्थान धरोहर प्राधिकरण

भू-तल, पर्यटन भवन, संजय मार्ग (विश्वकर्मा थाने के सामने), खासा कोठी, जयपुर-302001,
Tel:-0141-2615648/40, E-Mail : rhppa.jaipur@gmail.com

ई-निविदा सूचना संख्या 10/2025-26

निम्नलिखित कार्यो के लिए अनुभवी कंसलटेंट फर्मों से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाइन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

क्र. सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रु.)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	Consultancy Services for- Preparation of Detailed Project Report for development works, beautification and develop public facilities at Meera Bai Mandir, Merta, Nagaur Rajasthan. UBN / RFP Code: HPP2526RFP0004	20.00 Lakh	3 Months

निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाइट **http://eproc.rajasthan.gov.in** एवं **http://sppp.raj.nic.in** पर देखा जा सकता है। इच्छुक निविदादाताओं को अपने डिजीटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाइट **http://eproc.rajasthan.gov.in** पर रजिस्टर करवाना आवश्यक है।

राज.संवाद/सी/25/5156 मुख्य कार्यकारी अधिकारी

कार्यालय नगर पालिका निवाई

क्रमांक:-न.पा.नि. / निर्माण / 2025-26 / 4030 दिनांक:- 25.06.2025

ई. बोली सूचना संख्या :- 15/2025-2026

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्न कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में नगर पालिका निवाई में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों एवं विभिन्न अभियान्त्रिकी विभागो के संबंधित श्रेणी में "A" "AA" श्रेणी में पंजीकृत संवेदको एवं स्वायत्त शासन विभाग में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदको से, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में निविदाएं आमन्त्रित की जाती है। निविदा फार्म ऑनलाईन वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in व 'http://www.eproc.rajsthan.gov.in पर देखा जा सकता है :-

बोली का कार्य	NIB Code:- DLB2526A2929 (कुल 11 कार्य)
Unique Bid Number	DLB2526GLOB09230, 31, 33, 36, 38, 41, 43, 47, 49, 54, 57
बोली की कुल लागत	Rs 209.49 लाख (सभी कार्यो की अनुमानित लागत)
बोली जारी करने की दिनाक	दिनांक 30.06.2025 को 13:00 बजे से
बोली दस्तावेजो को डाउनलोड करने की शुरूआती दिनांक व समय	दिनांक 30.06.2025 को 13:00 बजे से
ऑन लाईन बोली जमा कराने की अन्तिम दिनांक	दिनांक 11.07.2025 सांय 18.00 बजे तक
ऑनलाईन तकनीकी बिड खोलने की दिनांक	दिनांक 14.07.2025 को अपराह 12:00 बजे
वित्तीय बिड खोलने की दिनांक व समय	Will be Intimated latter to the Technically qualified Bidders
बिड की वैधता समयावधि	90 Day

अध्यक्ष
नगर पालिका निवाई
राज.संवाद/सी/25/5133

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका निवाई

OFFICE OF EXECUTIVE ENGINEER P.H.E.D DIVISION TONK

No. 1750-1756 Date 16.6.2025

NIT No.45-47/2025-26

Online bids are invited on behalf of the Governer of Rajasthan from eligible enlisted /D and above class contractors of PHED, Rajasthan and meeting eligibility criteria. Contractors enlisted with other departments of Government of Rajasthan and enlisted withCPWD/Postal/Telecom/Railways/MES/ other state Government/ Central Government undertakings/organization in class eqivalent to A and above class of Rajasthan and meeting prescribed eligibility criteria may also apply Details of this Bid notification and pre-Qualification. criteria can also be seen in NTB exhibited on website www.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in and http://eproc.rajasthn.gov.in Bids are be submitted online electronic format on website http://eproc.rajasthn.gov.in

Work detail of NIT	Nit No-45-47/2025-26
NIB No	PHE2526A1793
UBN No	PHE2526WSRCO3672,PHE2526WSRC03674, PHE2526WSRC03678
Availabe/Submission of tender document at website	01.07.2925 up to 18:00 Hrs
Date & time of opening of tender	02.07.2025 up to 15:30 Hrs

निविदा प्रपत्र वेबसाईट http://eproc.rajasthn.gov.in & http://sppp.rajasthn.gov.inदेखे व डाउनलोड किये जा सकते हैं। धरोहर राशि एवं टेण्डर राशि ई चालान के माध्यम से जमा किये जावे।

(Kaluram Meena)
Executive Engineer
PHED DIVISON Tonk

कार्यालय मेडिकेयर रिलिफ सोसायटी, उप जिला चिकित्सालय, देवली (टोंक)

क्रमांक:- निविदा/स्टोर/2025-26/94 दिनांक:- 231.6.2025

निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2025-26 की शेष अवधि के लिए उप जिला चिकित्सालय देवली में मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना एवं अन्य निशुल्क श्रेणी में पंजीकृत मरीजों हेतु आर्तपेडिक इम्पलान्ट दिनांक 31.3.2026 तक के लिए दर अनुबन्ध (Rate Contract) पर उपलब्ध कराने हेचु पंजीकृत निर्माओं/डीलर/डिस्ट्रीब्यूटर्स से खुली निविदा आमंत्रित की जाती है। जिसका विवरण निम्नानुसार है-

दर अनुबन्ध का विवरण	मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना एवं अन्य नि:शुल्क श्रेणी में पंजीकृत मरीजों हेतु आर्थोपेडिक इम्पलान्ट हेतु दर संविदा (Rate Contract)
निविदा प्रपत्र शुल्क राशि रुपये	500/-
निविदा बिड अमानत राशि	16000/-
अनुमानित निविदा राशि रुपये	8.00 लाख रुपये
निविदा प्रपत्र उपलब्ध होने की दिनांक	23.06.2025
निविदा प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि व समय	30.6.2025 दोपहर 1.00 बजे तक
तकनीकी निविदा खोले जाने की तिथि व समय	30.6.2025 दोपहर 2.00 बजे बाद
निविदा प्रपत्र सामने दर्शायी वैबसाइट से भी डाउनलोड की जा सकती है।	www.sppp.rajasthan.gov.in

1. विस्तुत निविदा सूचना मय बोली दस्तावेज एमआरएस स्टोरकीपर से दिनांक 23.6.2025 से प्रात: 9.00 बजे से दोपहर 2 बजे तक प्राप्त कर सकते हैं व राजस्थान राज्य लोक उपापन पोर्टल पर भी देखा जा सकता है।
2. निविदायें, तकनीकी निविदा प्रपत्र तथा वित्तीय बोली प्रपत्र अलग-अलग लिफाफे में बन्द कर दोनों लिफाफों पर नामांकन (तकनीकी निविदा प्रपत्र या वित्तीय निविदा प्रपत्र) कर एक बडे लिफाफे में बन्द कर प्रस्तुत की जायेगी।
3. तकनीकी/क्वालिफाईड बिड दिनांक 30.6.2025 को दोपहर 2 बजे इस कार्यालय में उपस्थित बोलीदाता/संवेदक या उनके अधिकृत प्रतिनिधि के समक्ष उपापन समिति द्वारा खोली जायेगी व तकनीकी बोली में सफल बोलीदाता की ही वित्तीय बोली उसी दिन खोली जायेगी।
4. किसी भी निविदा/बोली को स्वीकार/अस्वीकार करने या किसी बोली को निरस्त करने का उपापन समिति का सर्वाधिकार सुरक्षित है। ऐसा करने के कारण लेखबद्ध किये जाएंगे।

सदस्य सचिव
मेडिकेयर रिलिफ सोसायटी
उप जिला चिकित्सालय देवली

श्री शेखावत राजपूत सेवा संस्थान में विधिक समिति का गठन

बढ़ता राजस्थान

पावटा (सुशील कुमार बंसल)। सत्ताईसा क्षेत्र की श्री शेखावत राजपूत सेवा संस्थान ने अपनी कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। संस्थान के अध्यक्ष दशरथ सिंह शेखावत भौनावास ने संरक्षक हरिसिंह खेलना और महामंत्री जगजीत सिंह कारोली की सहमति से विधिक समिति का गठन किया है। जिसमें राजेंद्र सिंह राजनोता, रतन सिंह मंढा, नरपत सिंह टसकोला, दलीप सिंह खेलना, सुरेंद्र सिंह कारोली, बलबीर सिंह भौनावास, धर्मवीर सिंह राजनोता आदि अधिवक्ताओं को विधिक समिति में अपनी सेवाएं देने के लिए सदस्य नियुक्त किया गया है, जो संस्थान के सदस्यों को विधिक सलाह और सहायता प्रदान करेगी। इस समिति के गठन से संस्थान को अपने सदस्यों के अधिकारों की रक्षा करने और उन्हें विधिक सहायता प्रदान करने में मदद मिलेगी।

कुलदीप धनकड़ के जन्मदिन पर सेवा कार्यों का आयोजन

बढ़ता राजस्थान

पावटा (सुशील कुमार बंसल)। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने विराटनगर विधायक और भाजपा प्रदेश प्रवक्ता कुलदीप धनकड़ के जन्मदिन को सेवा सप्ताह के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इसी क्रम में शुक्रवार को पावटा मंडल अध्यक्ष विरेन्द्र राठी के नेतृत्व में राजकीय उपजिला अस्पताल पावटा में फल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस मौके पर कार्यकर्ताओं ने अस्पताल में मरीजों को फल वितरित किए और उनके साथ बातचीत की। पावटा मंडल अध्यक्ष विरेन्द्र राठी ने कहा कि कुलदीप धनकड़ के जन्मदिन को सेवा भावना के साथ मनाने के लिए कार्यकर्ता प्रतिबद्ध हैं। पूर्व वाइस चेयरमैन नरपत सिंह और एससी मोर्चा से बद्री प्रसाद चौहान ने कहा कि सेवा सप्ताह के तहत क्षेत्र में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने कुलदीप धनकड़ के अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र की कामना की। योग गुरू पूरणमल यादव, काशीराम लंबोरा ने कहा कि कुलदीप धनकड़ के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ता समाज की सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। इस दौरान पीएमओ रवि बंसल, हितेंद्र लाटा, संतोष गुप्ता, विमल गर्ग, श्रीकांत मिश्रा, बहादुर सैनी, शिवम बोहरा, टिंकू प्रजापत और अन्य कार्यकर्ता बड़ी संख्या में मौजूद रहे। सभी ने कुलदीप धनकड़ के जन्मदिन पर सेवा कार्य में भाग लिया और उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

भीम आर्मी कार्यकारिणी विस्तार अजय मेघवंशी बने जिला सचिव

बढ़ता राजस्थान

पावटा (सुशील कुमार बंसल)। भीम आर्मी भारत एकता मिशन ने अपनी कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए एक नए नेतृत्व को जिम्मेदारी सौंपी है। राष्ट्रीय अध्यक्ष और नगीना सांसद चन्द्रशेखर आजाद के निर्देशानुसार राजस्थान प्रदेश संयोजक जितेन्द्र हटवाल और प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेन्द्र मेहरा ने कोटपूतली-बहरोड़ जिलाध्यक्ष मुकेश गोठवाल की अनुशंसा पर पावटा कस्बे के रामपुरा निवासी अजय मेघवंशी को जिला सचिव नियुक्त किया है। भीम आर्मी का उद्देश्य बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की विचारधारा को बढ़ावा देना है, जो बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर और मान्यवर कांशीराम की शिक्षाओं से प्रेरित है। संगठन का लक्ष्य समाज के वंचित वर्गों के अधिकारों की रक्षा करना और उन्हें सशक्त बनाना है। अजय मेघवंशी की नियुक्ति पर कैलाश गोठवाल, विजेन्द्र खाड़िया, कैलाश नैनावत, संदीप मेघवंशी, महेंद्र वाल्मिकी, प्रवीण खाड़िया, शेरसिंह, अशोक कुमार, रोहित वाल्मिकी, सुरेन्द्र वर्मा, अजय नारवाल समेत अन्य लोगों ने बधाई प्रेषित कर नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दी हैं।

कालिंजरी गेट मार्ग पर नाला निर्माण कार्य जारी, मार्ग अस्थायी रूप से बंद

बढ़ता राजस्थान

भीलवाड़ा/ग्रामीण (के एम कुरेशी)। जिले के शाहपुरा में शाहपुरा-भीलवाड़ा मार्ग स्थित कालिंजरी गेट पर इन दिनों नाला निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। नगर परिषद द्वारा कराए जा रहे इस निर्माण के चलते वर्तमान में यह मार्ग पूर्णत: बंद है तथा आवागमन को बाईपास मार्ग से संचालित किया जा रहा है। यह नाला वर्षों पुरानी जलनिकासी समस्या के समाधान हेतु बनाया जा रहा है, जिससे क्षेत्रवासियों को बरसात के मौसम में होने वाली जलभराव की समस्या से निजात मिलने की उम्मीद है। स्थानीय नागरिकों ने इस कार्य को लेकर संतोष जताया है और नगर परिषद के सभापति के प्रयासों की सराहना की है।

रोटरी क्लब उदयपुर का आभार प्रदर्शन आज

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (नि.स.)। रोटरी क्लब उदयपुर का वर्ष 2024-25 का आभार प्रदर्शन समारोह शनिवार 28 जून को सांय साढ़े सात बजे रोटरी बजाज भवन में आयोजित होगा। क्लब अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने बताया कि समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व उप महापौर पारस सिंघवी होंगे। समारोह में वर्ष पर्यन्त क्लब को सहयोग करने वाले सदस्यों को सम्मानित किया जायेगा।

जानकी से ब्याह रचाने रथ पर निकले भगवान जगन्नाथ, रथयात्रा में उमड़ा जनसैलाब

बढ़ता राजस्थान

राजगढ़(अलवर)। कस्बे के चौपड़ बाजार स्थित जगदीश जी के मन्दिर से जन-जन के आराध्य देव भगवान जगन्नाथ जी महाराज गरूडरूपी विमान पर सवार होकर सैकडो बारातियों के साथ माता जानकी को ब्याहने गंगाबाग स्थित जगन्नाथ मंदिर पर देर रात पहुंचे। कस्बे के चौपड़ बाजार स्थित मंदिर पर सायंकाल जगन्नाथ जी महाराज के रथ का पूजन परम्परागत तरीके से किया गया। संध्या आरती के बाद भगवान जगन्नाथ जी महाराज को ऐतिहासिक गरूड़रूपी रथ पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विराजमान किया गया। रथयात्रा शुरू होने से पूर्व पुलिस बल की टुकड़ी ने भगवान जगन्नाथ जी महाराज को सशस्त्र सलामी दी। इससे पूर्व सुबह नौ बजे वैवाहिक रस्म के तहत भगवान जगन्नाथ जी महाराज को कंगन डोरा बांधा गया। दोज पूजन का कार्यक्रम वैदिक मंत्रोच्चार के साथ आयोजित हुआ। इस मौके पर उपखंड अधिकारी हरकेश मीणा, नगरपालिका अध्यक्ष सतीश दुहारिया, मेला कमेटी के अध्यक्ष एडवोकेट महेन्द्र प्रसाद तिवाडी, सचिव हरिओम गुप्ता, उपाध्यक्ष कन्हैया लखेरा, गायत्री देवी,पण्डित रोहित शर्मा, विश्वास मित्तल, बसंत गुप्ता सहित मेला कमेटी के सदस्य मौजूद रहे।

श्रद्धालुओं ने मांगी मन्नते, जगह-जगह हुआ स्वागत

रथयात्रा के दौरान हरे कृष्णा हरे राम सत्संग भजन मण्डली, बैण्डबाजों की अगुवाई में रथ को श्रद्धालु खींचकर आगे बढ़ा रहे थे। रथयात्रा के आगे भगवान मदनमोहन जी महाराज, राधाकृष्ण की आकर्षक झांकी भी चल रही थी। श्रद्धालुओं ने रथ के नीचे से निकल कर मन्नते मांगी। रथयात्रा के मार्ग पर जगह-जगह श्रद्धालुओं के लिए शीतल जल, ठंडाई,शरबत व मीठे पानी की प्याऊ, जलेबी, पकौड़ी, कचौरी आदि की व्यवस्था रखी गई थी। रथयात्रा में जानकी मैया और भगवान जगन्नाथ जी का उद्घोष करते हुए श्रद्धालु चल रहे थे। रथयात्रा कस्बे के चौपड़ बाजार से शुरू होकर कांकवाड़ी बाजार,गोल सर्किल,सराय बाजार, उपखण्ड कार्यालय, बांदीकुई चौराहा होकर देर रात गंगाबाग पहुंची।

रथयात्रा के दौरान पट्टेबाजी का किया प्रदर्शन

रथयात्रा के दौरान पट्टेबाज कलाकारों का फूल मालाएं पहनाकर स्वागत किया गया। वाल्मीकि बस्ती के शक्ति दल के संयोजक के नेतृत्व में रथयात्रा के दौरान तलवार, लाठी,पट्टे बाजी, चक्र के हैरतंगेज करतब दिखाए गये। करतब देखने के लिए लोगो की भीड़ लगी रही।

मथुरा की शाही पोशाक में दूल्हे रूप में सजे भगवान जगन्नाथ

महन्त पूरणदास एवं पण्डित मदनमोहन शास्त्री ने बताया कि दूल्हे बने भगवान जगन्नाथ जी महाराज को मथुरा की शाही पोशाक व कोलकाता के इत्र तथा विशेष रूप का सऊदी अरब का इत्र तथा जयपुर के मोगरे की माला से भगवान जगन्नाथ जी महाराज को सजाया गया। इस दौरान भगवान जगन्नाथ जी रथयात्रा में बाराती बनने के लिए समूचा राजगढ़ कस्बे सहित आसपास के ग्रामीण इलाकों से हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए।

वहीं रथयात्रा के दौरान भक्तगण अपनी मनोकामना पूर्ण करने की मन्नोती मांगते हुए बडी संख्या में कस्बे के चौपड बाजार स्थित मंदिर से पेट पलनियां डण्डोती देते हुए देर रात्रि गंगाबाग पहुंचे।

इनरव्हील क्लब ऑफ उदयपुर दीवास की नयी कार्यकारिणी टीम की घोषणा

समीक्षा खण्डेलवाल अध्यक्ष एवं शशि मेहता सचिव बनीं

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (नि.स.)। इनरव्हील क्लब ऑफ उदयपुर दीवास की आज एक निजी होटल में कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न हुई। बैठक की जानकारी देते हुए संस्थापक अध्यक्ष रेखा भाणावत और अध्यक्ष नयना जैन ने बताया कि 1 जुलाई से शुरू हो रहे नए सत्र 2025-26 के लिए गठित की गई नई कार्यकारिणी में अध्यक्ष समीक्षा खंडेलवाल, उपाध्यक्ष आशा श्रीमाली, सचिव शशि मेहता, कोषाध्यक्ष अंजना दुगड़, आईएसओ डॉ. सुलेखा मोगरा और संपादक जयश्री जैन को मनोनीत किया गया है।

उदयपुर टैक्स बार एसोसिएशन द्वारा प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम कल, तैयारियाँ जोरों पर

बढ़ता राजस्थान

उदयपुर (नि.स.)। उदयपुर टेक्स बार एसोसिएशन के 75 वें स्थापना वर्ष पर प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम रविवार 29 जून को चित्रकूटनगर स्थित टेक्स बार भवन में भव्य रूप में आयोजित किया जायेगा। आयोजन की तैयारियों को लेकर शुक्रवार को बार अध्यक्ष सीए गौतम सुकलेचा के नेतृत्व में टेक्स बार भवन में एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें सभी पदाधिकारी एवं सदस्यगण सम्मिलित हुए। समारोह के मुख्य अतिथि पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया होंगे। सुकलेचा ने बताया कि बैठक में कार्यक्रम की प्रत्येक गतिविधि का विस्तारपूर्वक जायजा लिया गया। वृक्षारोपण एवं पौधारोपण हेतु स्थल का चयन कर गड्ढों की पूर्व तैयारी पूरी करवाई गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया के स्वागत हेतु सभी आवश्यक तैयारियों को लेकर सुधीर मेहता ने सभी के साथ गहनता के साथ विचार-विमर्श किया। सचिव अंकुश जैन के साथ दिलीप बाबेल, पंकज जैन, शैलेश महेश्वरी, आनंद पगारिया, आशीष रत्नावत,सी.पी.बंसल एवं कल्पेश जैन सहित कई सक्रिय सदस्यों ने आयोजन स्थल की सफाई एवं व्यवस्था सुनिश्चित की। कार्यक्रम स्थल पर टेंट व्यवस्था सहित अन्य आवश्यकताओं पर भी विस्तार से चर्चा कर योजनाबद्ध निर्णय लिए गए। टेक्स् बार अध्यक्ष सुकलेचा ने बताया कि कार्यक्रम में 25 एवं 50 वर्ष की सदस्यता पूर्ण करने वाले वरिष्ठ सदस्यों के सम्मानित किया जायेगा। कार्यक्रम को प्रेरणादायक बनाने हेतु मोटिवेशनल स्पीच के लिए विभिन्न विचारों एवं वक्ताओं के सुझावों पर चर्चा की गई। कार्यक्रम की रूपरेखा को अंतिम रूप देने हेतु टीम द्वारा सामूहिक सहयोग एवं समर्पण का भाव सराहनीय रहा। आयोजन को भव्य एवं यादगार बनाने हेतु सभी सदस्यगण प्रतिबद्ध हैं।

कुड़गांव थाना पुलिस ने एक करोड़ 10 लाख की स्मैक के साथ तीन स्मैक तस्करों को किया गिरफ्तार

बढ़ता राजस्थान

हिंडौन सिटी (अंशु गुप्ता)। कुडगांव थाना पुलिस और डीएसटी टीम ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए तीन स्मैक तस्करों को किया गिरफ्तार कुख्यात स्मैक तस्करों के कब्जे से एक बिना नम्बरी आरटीआर अपाची मोटरसाईकिल, 02 एंड्रायड व एक कीपैड मोबाईल को जप्त किया गया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गुमनाराम ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की थानाधिकारी चंचल शर्मा ने बताया कि मय जाप्ता मय डीएसटी टीम ने मुखबीर की सूचना पर गांवडियापुरा नडा पर नाकाबन्दी की।तभी नडे की तरफ से एक सफेद अपाची आरटीआर बगैर नम्बरी बाईक पर तीन व्यक्ति बैठकर आ आये और वाईक सवार व्यक्ति पुलिस नाकाबन्दी को देखकर वापस घुमाने की कोशिश करने लगे तो थानाधिकारी मय जाप्ता ने बाईक सवार व्यक्ति संदिग्ध दिखने पर वापस घूमने पर रोकने का इशारा किया तो वह हडबड़ाहट में भागने लगा। जिसे पुलिस जाप्ता ने पीछा कर रूकवाया और चैक किया गया तो संदिग्ध व्यक्ति स्मैक तस्कर घासीलाल पुत्र लक्ष्मीनारायण मीना निवासी मोतीपुरा थाना हरनावदा शाहजी जिला बांरा, कमल मीना पुत्र राजूलाल मीना निवासी उलियाना थाना कुण्डेरा जिला सवाईमाधोपुर, विकास पुत्र हरीकेश मीना निवासी गुडासी थाना कोतवाली जिला सवाईमाधोपुर को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों के कब्जे से 1 करोड 10 लाख की 293.9 ग्राम अवैध स्मैक व 4 लाख 200 जप्त किए गए। शातिर स्मैक तस्कर स्मैक की बडी खेप बांरा जिले से खरीद कर सवाईमाधोपुर, गंगापुरसिटी, करौली, कुडगाँव, सपोटरा इलाके में अवैध रूप से सप्लाई करते थे। गिरफ्तारशुदा स्मैक तस्करों से स्मैक की खरीद फरोख्त, संलिप्त अन्य व्यक्तियों के सम्बन्ध में सख्ती से गहध पूछताछ की जा रही है। टीम में थानाधिकारी चंचल शर्मा, सहायक उपनिरीक्षक सुमेर सिंह, कॉन्स्टेबल पुरुषोत्तम, मोहन सिंह, नन्दराम, प्रेममोहन, वाहन चालक योगेन्द्र और जिला स्पेशल टीम प्रभारी देवेश जाटव तथा टीम सदस्य: जिलयसिंह, रामदास, कमलसिंह, ललित किशोर, नेमीचंद, आकाश सोलंकी, रवि कुमार मीना, धर्मवीर सिंह, अमीर सिंह, सत्येन्द्र, पालवेन्द्र, पुष्पेन्द्र, हरेन्द्र शामिल रहे।

पत्नी ओर बेटे की हत्यारे को आजीवन कारावास की सजा

बढ़ता राजस्थान

भीलवाड़ा/ग्रामीण (के एम कुरेशी)। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश सानिया हाशमी ने गांव अमरवासी पुलिस थाना हनुमान नगर जिला भीलवाड़ा में वर्ष 2021 में हुए पत्नी ओर बेटे के दोहरे हत्या कांड के अभियुक्त छैल बिहारी को अपराध धारा 302 भारतीय दंड संहिता के दोष सिद्ध आरोप में आजीवन कारावास एवं पच्चीस हजार रुपए के अर्थदंड की सज़ा सुनाई। अपरलोक अभियोजक हितेष शर्मा ने बताया कि उक्त प्रकरण में पत्रावली पर उपलब्ध तथ्यों के अनुसार परिवादी ओंकार सिंह द्वारा थानाधिकारी पुलिस थाना हनुमान नगर को एक तहरीरी रिपोर्ट पेश कर मुकदमा इस आशय का दर्ज कराया की परिवादी की पुत्री शिमला देवी का विवाह छैल बिहारी पुत्र राजेंद्र उर्फ लालाराम निवासी अमरवासी थाना हनुमान नगर जिला भीलवाड़ा के साथ हुआ था दिनांक 29 मार्च 2021 की रात्रि को शिमला के प्रति छैल बिहारी ने शिमला के सिर व ललाट पर पत्थर से चोट मार कर एवं पुत्र राहुल के सिर पर पत्थर से चोट मार कर एवं ओढ़नी से फांसी लगाकर उन दोनों की हत्या कर दी इत्यादि । जिस पर पुलिस थाना हनुमान नगर द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया, प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 51/2021 पुलिस थाना हनुमान नगर अपराध धारा 302 भारतीय दंड संहिता, संपूर्ण अनुसंधान पूरा होने के बाद अभियुक्त छैल बिहारी के खिलाफ अपराध धारा 302 भारतीय दंड संहिता में माननीय न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट जहाजपुर जिला भीलवाड में आरोप पत्र पेश किया गया जहां से आरोप सेशन न्यायालय में विचारणीय होने से माननीय सेशन न्यायालय शाहपुरा कैंप जहाजपुर में कमिट होकर दर्ज हुआ। मामले में अभियोजन पक्ष की ओर से अपर लोक अभियोजक हितेष शर्मा ने पैरवी की। प्रकरण में अभियोजन पक्ष से अपर लोक अभियोजक हितेष शर्मा द्वारा 24 साक्षी परीक्षित करवाए गए एवं पत्रवाली में पेश 39 दस्तावेजों पर प्रदर्श अंकित कराए गए । इसके आधार पर माननीय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश सानिया हाशमी ने अभियोजन पक्ष की तरफ से पेश सभी गवाहों ओर दस्तावेजों से सहमत होते हुए अभियुक्त छैल बिहारी पुत्र राजेंद्र उर्फ लालाराम निवासी अमरवासी पुलिस थाना हनुमान नगर जिला भीलवाड़ा को धारा अंतर्गत 302 भारतीय दंड संहिता के दोष सिद्ध आरोप में आजीवन कारावास एवं पच्चीस हजार रुपए के अर्थदंड की सज़ा सुनाई।

पं. दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़ा शिविर का आयोजन

बढ़ता राजस्थान

पावटा (सुशील कुमार बंसल)। ग्राम पंचायत जयसिंहपुरा में पं. दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़ा के अन्तर्गत आयोजित शिविर में एक युवक को भूमी का पट्टा मिलने पर वह खुशी से झूम उठा। लाभार्थी सुरेश कुमार ने बताया कि उन्हें सरपंच द्वारा शिविर की सूचना मिली, जिसके बाद वे शिविर में पहुंचे और अधिकारियों से वार्ता करने के बाद उन्हें संबंधित दस्तावेज प्राप्त हुआ। लाभार्थी सुरेश कुमार को विराटनगर उपखण्ड अधिकारी अमिता मान और शिविर प्रभारी एवं तहसीलदार विराटनगर लाला राम यादव की उपस्थिति में भूमी पट्टा सौंपा गया। सुरेश कुमार ने बताया कि उनके परिवार को लम्बे इंतजार के बाद स्वामित्व योजना में पट्टे का लाभ दिया गया है, जिससे अब वे विभिन्न योजनाओं और बैंक से वित्तीय मदद प्राप्त कर सकते हैं। लाभार्थी सुरेश कुमार ने प्रशासन और सरकार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह लाभ उनके परिवार के लिए वरदान साबित होगा। उन्होंने बताया कि अब वे अपने भविष्य को संवारने के लिए विभिन्न योजनाओं का लाभ उठा सकेंगे।

भूखंड आवंटन लॉटरी पर कोर्ट की रोक : अधिवक्ताओं को आरक्षण नहीं देने पर उठाया गया कदम

बढ़ता राजस्थान

भीलवाड़ा, (अमित शर्मा)। भीलवाड़ा नगर विकास न्यास (यूआईटी) की आठ आवासीय योजनाओं के तहत प्रस्तावित 3081 भूखंडों की लॉटरी प्रक्रिया पर सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट (पूर्व) की अदालत ने शुक्रवार को अग्रिम आदेश तक स्थगन (स्टे) लगा दिया है। यह आदेश जिला अभिभाषक संस्था की याचिका पर सुनवाई के बाद दिया गया। इस आदेश से जहां अधिवक्ता समुदाय में उत्साह और संतोष की लहर है, वहीं भूखंड पाने की आस लगाए गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों में निराशा फैल गई है।

मामला क्या है?

राज्य सरकार की ओर से बजट में गरीब व मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए आवासीय भूखंड योजना की घोषणा की गई थी। इसके तहत यूआईटी ने पंचवटी, तिलकनगर, मोहनलाल सुखाड़िया नगर, एपीजे अब्दुल कलाम नगर, पटेल नगर, पटेल नगर विस्तार, आरपी लढ़ा नगर और नया पुर क्षेत्र में विभिन्न आकार के 3081 भूखंडों के लिए लॉटरी प्रक्रिया से आवंटन की योजना बनाई थी। लेकिन जिला अभिभाषक संस्था ने कोर्ट में याचिका दायर कर कहा कि वर्ष 2013 में स्वायत्त शासन विभाग द्वारा जारी अधिसूचना में अधिवक्ता समुदाय को 5 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रावधान था। यूआईटी द्वारा जारी नई योजना में इस प्रावधान की अनदेखी की गई, जो विधि विरुद्ध है।

कोर्ट का फैसला

कोर्ट ने सुनवाई के बाद लॉटरी प्रक्रिया और उससे जुड़ी आगे की कार्रवाई पर अस्थायी रोक लगा दी है। हालांकि, फॉर्म की बिक्री और जमा प्रक्रिया पर कोई रोक नहीं है।

यूआईटी सचिव ललित गोयल का बयानक

कोर्ट ने केवल लॉटरी और आगे की कार्रवाई पर रोक लगाई है। आवेदन फॉर्म की बिक्री और जमा प्रक्रिया यथावत जारी रहेगी।

याचिकाकर्ताओं की ओर से मौजूद अधिवक्ता

राजेश शर्मा, साबीर हुसैन, ओमप्रकाश तेली समेत अन्य अधिवक्ताओं ने अदालत में पक्ष रखा। यह मामला अब न्यायालय के अंतिम निर्णय तक लंबित रहेगा। अधिवक्ता समुदाय ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कानूनी रास्ता अपनाया है, जबकि आमजन को अब लॉटरी प्रक्रिया में देरी का सामना करना पड़ सकता है।

उपनिदेशक डॉ. सोनल राज कोठारी को राज्य स्तरीय पी.सी. महालनोबिस सांख्यिकी अवार्ड से किया जाएगा सम्मानित

बढ़ता राजस्थान

भीलवाड़ा, (अमित शर्मा)। जिले के आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग में उपनिदेशक पद पर कार्यरत डॉ. सोनल राज कोठारी को सांख्यिकी क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए राज्य सरकार द्वारा राज्य स्तरीय प्रो. पी.सी. महालनोबिस सांख्यिकी अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान उन्हें 29 जून 2025 को सांख्यिकी दिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में प्रदान किया जाएगा। राज्य स्तरीय यह सम्मान कार्यक्रम राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर,संस्थान पथ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर में प्रातः 9:30 बजे आयोजित होगा, जिसमें डॉ. कोठारी को सम्मानित किया जाएगा। इस अवसर पर आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी गई हैं।

भीलवाड़ा में आज शिखर संगम कार्यक्रम में आयेगे राष्ट्रीय पदाधिकारी

बढ़ता राजस्थान

भीलवाड़ा, (अमित शर्मा)। राष्ट्रीय माहेश्वरी महिला संगठन का शिखर संगम कार्यक्रम भीलवाड़ा में शनिवार को शाम 3.30 बजे से रामस्नेही वाटिका मे राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित होगा। पश्चिमांचल संयुक्त मंत्री शिखा भदादा ने बताया कि यह कार्यक्रम प्रदेश, जिला संगठन और नगर माहेश्वरी महिला संस्थान, भीलवाड़ा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाले शिखर संगम कार्यक्रम की तैयारियों का जायजा राष्ट्रीय संगठन मंत्री ममता मोदानी ने लिया। प्रदेश अध्यक्ष सीमा कोगटा, जिला अध्यक्ष प्रीति लोहिया, और नगर अध्यक्ष डॉ. सुमन सोनी ने बताया की शिखर संगम कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजू बांगड़ (कानपुर), राष्ट्रीय महामंत्री ज्योति राठी (छत्तीसगढ़), कोषाध्यक्ष किरण लड्ढा (दिल्ली), निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी (कोटा), पश्चिमांचल उपाध्यक्ष मधु बाहेती (कोटा), पश्चिमांचल संयुक्त मंत्री शिखा भदादा (भीलवाड़ा), अतिथि के तौर पर शामिल होंगे। इस विशेष अवसर पर भीलवाड़ा जिला, तहसील, नगर, और क्षेत्रीय स्तर की लगभग 200 महिला पदाधिकारी उपस्थित रहेंगी जो कार्यक्रम की गरिमा को और अधिक बढ़ाएंगी। कार्यक्रम की तैयारी में प्रभारी मोना डाड और विनीता तोषनीवाल ने बताया कि कार्यक्रम को भव्य रूप देने के लिए सभी अपनी-अपनी जिम्मेदारियों को योजनाबद्ध तरीके से निभा रहे हैं, ताकि यह आयोजन भव्यता और गरिमा के साथ संपन्न हो सके। कार्यक्रम की प्रोजेक्ट प्रभारी, जिला सचिव भारती बाहेती और नगर सचिव सोनल माहेश्वरी ने बताया कि इस अवसर दुर्गा वाहिनी की आत्मसुरक्षा कार्यशाला, (यशोदा मंडोवरा) द्वारा संचालित, कन्यादान योजना, मेडिकल बैंक का विस्तार, शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति योजना, सेवाश्रम स्कूल के बच्चों हेतु भोजन की प्लेट वितरण, सहित कई महत्वपूर्ण सामाजिक सेवाओं को भी शामिल किया जाएगा। तैयारियों में निशा काकानी, अंकिता राठी, स्नेहलता तोषनीवाल, सीमा बिड़ला, मधु डाड, और संध्या आगीवाल सहित कई अन्य सदस्य भी अपने-अपने उत्तरदायित्व निभा रहे हैं। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सेवा, और संगठनात्मक एकता को मजबूती

कड़वा सेब या कड़वी ककड़ी का यूनानी चिकित्सा में उत्कृष्ट महत्व : डॉ लियाक़त अली मंसूरी

जयपुर। सिट्रुलस कोलोसिन्थिस को आमतौर पर कोलोसिन्थ, कड़वा सेब, या कड़वा ककड़ी के नामों से जाना जाता है। यह जंगली एवं बारह मासी बेल है जो कुकुर्बिटेसी परिवार से है। यह भारत सहित भूमध्यसागरीय बेसिन और पश्चिम एशिया, अफ्रीका का मूल निवासी है, और यह शुष्क व रेगिस्तानी क्षेत्रों के वातावरण के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित होने से बहुतायत से पाया जाता है। यह पौधा अपने औषधीय गुणों के लिए बहुत ही उपयोगी है, विशेष रूप से पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों में, लेकिन इसमें ज़हरीले यौगिक फलों और पत्तियों में बहुतायत से पाये जाते हैं । यह पौधा खुरदरे, बालों वाले तने के साथ एक बारह मासी जड़ी-बूटी वाली बेल जो ज़मीन पर फैल कर चलती है या चढ़ सकती है। इसकी पत्तियां वैकल्पिक, स्पर्श करने पर खुरदरी, और गहराई से लोब्ड होती हैं। इसके फूल पीले, एकान्त, और पत्ती की धुरी में लंबे डंठल पर पैदा होते हैं। इसके फल गोलाकार, एक कठोर छिलका के साथ, और परिपक्व होने पर यह कड़वा, स्पंजी, सफेद गूदा वाला होता हैं । इसके फल के अन्दर बीज कई असंख्य व छोटे होते हैं यह फल कड़वा होता हैं इसीलिए इस पौधे को कड़वा सेब या कड़वा ककड़ी कहते हैं, इसके बीजों का तेल भी निकलता है जिनमें प्रोटीन समृद्ध होता हैं। इसके फल, बीज और बीजों का तेल औषधियों के रूप में इस्तेमाल किये जाता हैं।

यूनानी चिकित्सा में पारंपरिक औषधीय उपयोग

1. शुगररोधी--पारंपरिक चिकित्सा के रूप में मधुमेह और टाइप 2 मधुमेह में रक्त शर्करा के स्तर को प्रतिबंधित करने में लाभ देता हैं। 2. दर्दनिवारक एवं सुजनरोधी –जोड़ों का दर्द एवं सूजन में आराम देता हैं। 3. जठर और आँतों की बीमारी में–जठरांत्र संबंधी जैसे गैस्ट्रोइंटेराइटिस , अपच, कब्ज़ (रेचक) और आँतों की सफ़ाई (शोधक) के रूप में, आँतों के परजीवी (कृमि नाशक) का ईलाज करने में मदद करता हैं। 4. त्वचा रोगों में –त्वचा की समस्याओं जैसी विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग किया जाता है। 5. जिगर के रोगों में –पीलिया जैसी बीमारियों में पारंपरिक चिकित्सा करने में लाभकारी है। 6. फेफड़े के रोगों में–अस्थमा की बीमारियों में पारंपरिक चिकित्सा में उपयोगी है। 7. ओंकोलॉजी में – यूनानी चिकित्सा में इसे कैन्सर विरोधी के रूप में अत्यन्त लाभकारी बताया है। यूनानी चिकित्सा के अनुसार इसके बीजों के तेल को कैंसर के घावों पर ड्रेसिंग करने में एवं पत्तियों के रस को बूँदो के रूप में रोगानुसार प्रयोग कराया जाता हैं। चिकित्सा जगत को इस पौधे पर शोध की ज़रूरत है।

विषाक्तता से सावधान— इस पौधे के सभी हिस्से विशेष रूप से फल और बीज में विषाक्त यौगिक पाए जाते हैं, यदि इसे निगला जाता है तो गंभीर दुष्प्रभाव हो सकते हैं। बीमारियों में इसकी उचित खुराक बहुत ही महत्वपूर्ण है, लेकिन इसकी छोटी मात्रा भी गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल संकट, गुर्दे की क्षति और अन्य जटिलताओं जैसे गंभीर दुष्प्रभाव पैदा कर सकती है इसलिये इसे यूनानी चिकित्सक की देखरेख में ही उपयोग किया जाये। एफडीए (खाद्य एवं औषधि प्रशासन) द्वारा प्रतिबंध— यूएस एफडीए ने सुरक्षा चिंताओं के कारण कोलोसिन्थ पर प्रतिबंध लगा दिया है।

डॉ लियाक़त अली मंसूरी
(यूनानी चिकित्सक एवं हिजामा थैरेपी स्पेशियलिस्ट) सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर (राज.)

40 से अधिक प्रकरणों की हुई सुनवाई-रति चंद जी का खेड़ा में जिला कलक्टर ने की रात्रि चौपाल

बढ़ता राजस्थान

चित्तौड़गढ़। जिला कलक्टर आलोक रंजन ने गुरुवार रात्रि को बड़ी सादड़ी उपखंड की ग्राम पंचायत रति चंद जी का खेड़ा में रात्रि चौपाल एवं जनसुनवाई का आयोजन कर ग्रामीणों से सीधा संवाद किया। इस अवसर पर 40 से अधिक प्रार्थना पत्रों पर मौके पर ही सुनवाई कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए गए। रात्रि चौपाल के दौरान जिला कलक्टर आलोक रंजन ने ग्रामीण थावर सिंह के खाद्य सुरक्षा सूची में नाम जोड़ने संबंधी आवेदन पर पटवारी एवं ग्राम सेवक को निर्देशित किया कि पोर्टल खुले होने की स्थिति में पात्र व्यक्तियों के नाम तत्काल सूची में जोड़े जाएं। उन्होंने ग्राम सुंदरपुर में सड़क निर्माण, हैंडपंप स्थापना, पनघट से पानी की आपूर्ति तथा पालनहार योजना में पात्र बच्चों के नाम जोड़ने संबंधी निर्देश भी संबंधित विभागों को दिए। इसी तरह दूल्हे सिंह के सीमा ज्ञान प्रकरण पर भी आवश्यक कार्रवाई की गई। चौपाल के दौरान कई प्रार्थना पत्रों पर मौके पर ही निराकरण की कार्यवाही की गई, जिससे ग्रामीणों को राहत मिली। जिला कलक्टर ने मौके पर उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए कि जनसमस्याओं का प्राथमिकता से निस्तारण सुनिश्चित किया जाए ताकि आमजन को सरकार की योजनाओं का त्वरित लाभ मिल सके। रात्रि चौपाल में प्रशिशु आईएएस रविंद्र मेघवाल, अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी राकेश पुरोहित, उपखंड अधिकारी प्रवीण कुमार, तहसीलदार विकास अधिकारी ग्राम पंचायत प्रशासक जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

राष्ट्र जागरण ज्योति कलश यात्रा का उन्हैल नागेश्वर में भव्य स्वागत

बढ़ता राजस्थान

चौमहला (आबिद हुसैन)। झालावाड़ जिले के उन्हैल में शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में देशभर में निकाली जा रही राष्ट्र जागरण ज्योति कलश यात्रा का शुक्रवार शाम को उन्हैल नागेश्वर में भव्य स्वागत हुआ। रथ यात्रा के गांव आगमन के पश्चात पूरे गांव में भ्रमण कराया गया। कलश यात्रा के कस्बे के विश्व प्रसिद्ध नागेश्वर जैन तीर्थ पहुंचने पर नागेश्वर तीर्थ पेढ़ी के सदस्यों द्वारा द्वारा पूजा अर्चना कर स्वागत किया गया। दीप चौक पर जैन सोशल ग्रुप के अध्यक्ष अजय जैन द्वारा स्वागत किया गया। यात्रा के मार्ग में जगह-जगह ग्रामीणों ने पुष्प-वर्षा, से स्वागत किया और रथ में विराजित ज्योति कलश के दर्शन कर पुण्य लाभ लिया। यह रथ यात्रा शुक्रवार को गंगाधर खंड के दल की रुड़ी ,लाखा खेड़ी, भाटखेड़ी, बिलावली का खेड़ा ,गुराडिया देवड़ा, कीटिया होते हुए बामन देवरिया रायपुरिया खेर खेड़ा होते हुए उन्हेंल नागेश्वर व सेदरा डोकरखेड़ा होते हुए रात्रि को बिलखेड़ी गांव पहुंची जा बिलखेड़ी ग्राम मैं भी ग्रामीणों ने जोरदार स्वागत किया रथ यात्रा का रात्रि विश्राम बिल खेड़ी में हुआ।यह ज्योति कलश यात्रा अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन में, वंदनीय माताजी की जन्म शताब्दी वर्ष एवं अखंड दीप प्राकट्य के उपलक्ष्य में निकाली जा रही है। इसका उद्देश्य गांव-गांव में सद्ज्ञान, सद्भाव और आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रसार करना है।

दीवाना शाह दरगाह शरीफ कपासन पर जायरीनों का हुजूम उमड़ा

बढ़ता राजस्थान

कपासन (नि.स.)। प्रख्यात सूफी संत हजरत दीवाना शाह साहब र.अ. की दरगाह शरीफ पर इस्लामी नये साल 1447 हिजरी नौ चंदी जुमेरात पर जायरीने दीवाना का हुजूम उमड़ा।साथ ही 25 मोहरर्म सोमवार को अलम शरीफ पेश होगा। दरगाह हजरत दीवाना शाह साहब र.अ. सैक्रेट्री शफी मोहम्मद छीपा ने बताया कि गुरूवार सुबह से जायरीन का आना शुरू हो गया।दर्शन हेतु लम्बी-लम्बी कतारे लगी।अहाता ए नूर मे महफिले मिलाद एवं कव्वाल हजरात ने बारी-बारी से अपने कलाम पेश किए। यहां मेला ग्राउण्ड मे 300 से उपर दुकाने लगी। सांयकाल चिराग बत्ती के समय मुल्क मे अमनो सुकून की दुआ की तो आमीन-आमीन की सदा से दरगाह परिसर गूंज उठा। इधर 25 मोहरर्म सोमवार 21 जुलाई को आस्ताना ए आलिया एवं बुलन्द दरवाजा पर बाद नमाज़े असर के अलम शरीफ पेश करने की रस्म अदा की जाएगी।6 से 8 सफर तक,इन्शा अल्लाह 1 अगस्त से उर्स शुरू होकर 3 अगस्त को कुल की फातिहा के साथ 84वां उर्स सम्पन्न होगा।

15 साल बाद सीतापुरा आईटीआई को मिली अपनी ज़मीन

बढ़ता राजस्थान

बूंदी (अनन्त दाधीच)। आखिरकार 15 साल के लंबे इंतज़ार के बाद सीतापुरा औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) को अपनी आवंटित भूमि मिल गई है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़े के तहत शुक्रवार को ग्राम पंचायत भवन सीतापुरा, तहसील तालेड़ा में आयोजित शिविर में यह महत्वपूर्ण कार्यवाही की गई। ग्राम सीतापुरा के खसरा संख्या 1277/96 में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तालेड़ा को 1.8454 हेक्टेयर सिवायचक भूमि आवंटित की गई थी। आईटीआई अधीक्षक ने शिविर में ज़मीन का सीमाज्ञान और पत्थरगढ़ी करवाने की मांग की। इस पर तुरंत कार्यवाही करते हुए राजस्व टीम ने मौके पर पहुंचकर भूमि का सीमाज्ञान किया और सभी कच्चे-पक्के अतिक्रमण हटा दिए। आईटीआई अधीक्षक की मौजूदगी में भूमि की चारों दिशाओं में पत्थरगढ़ी भी की गई। अपनी ज़मीन मिलने पर आईटीआई अधीक्षक और सभी छात्रों ने जिला कलेक्टर, उपखंड अधिकारी और तहसीलदार, तालेड़ा का आभार व्यक्त किया है। रास्ते को राजस्व रिकॉर्ड में किया दर्ज, ग्रामीणों के चेहरे खिले वही बूंदी जिले की हिंडोली तहसील के अणतगंज ग्राम पंचायत में शुक्रवार को आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़े के शिविर में ग्रामीणों की वर्षों पुरानी समस्या का समाधान हुआ। ग्राम खटावदा में नहर से सती माता स्थान और पुरानी आबादी तक का रास्ता अब राजस्व रिकॉर्ड में गैर-मुमकिन (गे.मु.) रास्ते के तौर पर दर्ज कर लिया गया है। ग्रामीणों ने शिविर में इस रास्ते को राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज करने का अनुरोध किया था। यह रास्ता खसरा संख्या 296, 549 और 548 में स्थित राजकीय सिवायचक भूमि से होकर गुजरता है और इसका कुल रकबा 0.2750 हेक्टेयर है, जिसकी कुल लंबाई 550 मीटर है।अणतगंज हल्का पटवारी द्वारा मौके का निरीक्षण करने के बाद इस रास्ते को राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज करने का प्रस्ताव तैयार किया गया।

तीन युवकों ने व्यापारी से लूटी पांच लाख रुपये की नकदी, डीएसटी टीम ने मुख्य आरोपी को पकड़ा

बढ़ता राजस्थान

भीलवाड़ा, (अमित शर्मा) । थाना पुर क्षेत्र में एक व्यापारी से पांच से साढ़े पांच लाख रुपये की नकदी लूटने की वारदात में फरार चल रहे तीसरे आरोपी को डीएसटी टीम ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने पहले ही दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था, जिन्होंने पूछताछ में अपने तीसरे साथी द्वारा वारदात की योजना बनाने और तीनों के मिलकर लूट की घटना को अंजाम देने की बात स्वीकार की थी। प्राप्त जानकारी के अनुसार दिनांक 1 जून 2024 को प्रार्थी गोपाल लाल पुत्र जगदीश चंद्र शर्मा, उम्र 45 वर्ष निवासी मंगलपुरा थाना पुर जिला भीलवाड़ा ने रिपोर्ट दी कि उनकी किराना की दुकान 'जगदीश किराणा स्टोर' बालाजी मंदिर, बिलियापुर रोड पर स्थित है। वह रात करीब 9-35 बजे दुकान बंद कर घर लौट रहे थे, तभी अजूबा पेट्रोल पंप के आगे तीन युवक मोटरसाइकिल पर आए और उनकी मोपेड के आगे अपनी बाइक अड़ाकर उन्हें गिरा दिया। इसके बाद आरोपियों ने उनका बैग छीन लिया और मौके से फरार हो गए। बैग में लगभग पांच से साढ़े पांच लाख रुपये की नकदी थी। इस रिपोर्ट के आधार पर थाना पुर में प्रकरण संख्या 143/2024 धारा 392 आईपीसी में मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया गया। अनुसंधान के दौरान दो आरोपियों राहुल पुत्र विनोद कुमार जीनगर एवं कौशल पुत्र श्यामलाल जीनगर निवासी बागौर को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में उन्होंने बताया कि यह पूरी वारदात उनके मित्र रामरतन पुत्र मदनलाल लोहार ने योजना बनाकर करवाई थी और तीनों ने मिलकर लूट को अंजाम दिया। घटना के बाद से ही मुख्य आरोपी रामरतन फरार चल रहा था और गिरफ्तारी से बचने का प्रयास कर रहा था। लेकिन डीएसटी टीम के कांस्टेबल अमृत सिंह और ऋषीकेश को सूचना मिलने पर उन्होंने रामरतन का पीछा कर उसे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी रामरतन पुत्र मदनलाल लोहार, उम्र 27 वर्ष, निवासी बागौर थाना बागौर जिला भीलवाड़ा है। उसके विरुद्ध पूर्व में एससी-एसटी एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज होकर न्यायालय में विचाराधीन है। इस कार्रवाई में पुलिस की गठित टीम में थानाधिकारी पुष्पा कसोटिया, डीएसटी प्रभारी महेन्द्र कुमार, एएसआई गोपाल लाल, हेड कांस्टेबल ओमप्रकाश, प्रताप विश्नोई, कांस्टेबल अमृत सिंह, ऋषीकेश, नरेन्द्र सिंह, रविन्द्र सिंह तथा साइबर सेल से हैड कांस्टेबल सत्यनारायण शामिल रहे।

मुख्यमंत्री अवधिपार ब्याज राहत एकमुश्त समझौता योजना में पात्र ऋणियों को मिल रही राहत

बढ़ता राजस्थान

बूंदी। मुख्यमंत्री अवधिपार ब्याज राहत एकमुश्त समझौता योजना 2025-26 के तहत राजस्थान राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक लिमिटेड जयपुर के निर्देशानुसार पंचायत समिति नैनवां में 24 जून को स्थान देई क्रय विक्रय सहकारी समिति, पंचायत समिति के.पाटन में 25 जून को स्थान ग्राम सेवा सहकारी समिति झालीजी का बराना व पंचायत समिति हिंडोली में 26 जून को स्थान हिण्डोली क्रय विक्रय सहकारी समिति में शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में योजनान्तर्गत पात्र ऋणियों को राहत के बारे में जानकारी प्रदान की गई। सचिव भूमि विकास बैंक लिमिटेड ने बताया कि बूंदी भूमि विकास बैंक की योजना में 416 सदस्य पात्र हैं। जिन्हें कुल 743.17 लाख रुपये की राहत प्रदान की जानी है। उन्होंने बताया कि 26 जून तक पात्र 40 ऋणियों द्वारा 36.45 लाख रुपये की राशि जमा कर 99.91 लाख रुपये की राहत प्राप्त की जा चुकी हैं। योजना अनुसार शेष पात्र ऋणियों को राहत का लाभ लेने के लिए 30 जून तक जमा कराने योग्य राशि की 25 प्रतिशत राशि जमा करवाना अनिवार्य हैं। सचिव द्वारा शेष पात्र रहें सभी सदस्यों से अपील की गई है कि योजना अनुसार निर्धारित समय पर राशि जमा कर अधिक से अधिक लाभ लें।

रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व से 25 और परिवार विस्थापित, कुल संख्या 102 हुई

बढ़ता राजस्थान

बूंदी (अनन्त दाधीच)। बूंदी में शुक्रवार को बूंदी जिले में रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व से 25 और परिवारों को सफलतापूर्वक विस्थापित किया गया। इस प्रक्रिया के साथ, रिजर्व से अब तक कुल 102 परिवारों को उनके मूल स्थानों से स्थानांतरित किया जा चुका है। यह विस्थापन अभियान जिला प्रभारी अधिकारी श्री टी. मोहन राज और फील्ड डायरेक्टर ऋ्क्ष्ञ्क्ष्ञ्क्र श्री सुगनाराम जाट के मार्गदर्शन में, तथा उपवन संरक्षक एवं उपक्षेत्र निदेशक (कोर) रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व श्री अरविन्द कुमार झा के निर्देशन में संपन्न हुआ। ग्राम गुलखेड़ी में हुए इस विस्थापन के दौरान मौका मजिस्ट्रेट तहसीलदार रायथल, क्षेत्रीय वन अधिकारी रामगढ़ और थानाधिकारी रायथल भी मौजूद रहे। पूर्व में 77 परिवारों को पूरी तरह से विस्थापित किया जा चुका था, और आज के 25 परिवारों के साथ यह संख्या 102 तक पहुंच गई है। क्षेत्रीय वन अधिकारी जैतपुर और डिवीजन उड़नदस्ता के संयुक्त प्रयासों से यह विस्थापन प्रक्रिया सुचारु रूप से संपन्न हुई। अधिकारियों ने बताया कि शेष बचे परिवारों को भी भूमि और मकानों से पूर्ण रूप से विस्थापित करने की कार्यवाही निरंतर जारी रहेगी।

फ्लैगशिप योजनाओं, बजट घोषणाओं व अभियानों की प्रगति की समीक्षा

चित्तौड़गढ़। जिला परिषद के ग्रामीण विकास अभिकरण सभागार में शुक्रवार को अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) प्रभा गौतम एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर (भू.अ.) रामचंद्र खटीक की उपस्थित में जिला स्तरीय अधिकारियों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में फ्लैगशिप योजनाओं, मुख्यमंत्री बजट घोषणाओं एवं विभिन्न विभागीय अभियानों की प्रगति की विभागवार समीक्षा की गई। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, विद्युत, कृषि, उद्यानिकी, शिक्षा, चिकित्सा, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, महिला एवं बाल विकास, जल संसाधन आदि विभागों की योजनाओं की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को समयबद्ध प्रगति सुनिश्चित करने व योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के निर्देश दिए गए।

बाड़ी में महिला और युवती ने किया सुसाइड का प्रयासः चूहे मारने की दवा और जहर खाकर जान देने की कोशिश की, धौलपुर रेफर

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी (राजू शर्मा)। बाड़ी शहर के सामान्य अस्पताल में एक युवती और एक महिला द्वारा विषाक्त पदार्थ का सेवन कर सुसाइड करने के प्रयास का मामला सामने आया है। डॉक्टर ने दोनों को अस्पताल में भर्ती का उपचार दिया गया। हालत में सुधार नहीं होने पर जिला अस्पताल धौलपुर रेफर किया है। डॉ. महेश गुप्ता ने बताया-बुधवार की रात करीब 11 बजे शहर के गुमट अजीजपुरा क्षेत्र से एक विवाहित महिला को परिजन अस्पताल लेकर आए। जिसके बारे में जानकारी करने पर परिजनों ने बताया कि महिला ने पति से परेशान होकर गृह क्लेश के चलते चूहा मारने की दवा का सेवन कर लिया है। ऐसे में तुरंत पूजा को अस्पताल में भर्ती कर उपचार दिया गया। जब उसकी हालत में सुधार नहीं हुआ तो देर रात जिला अस्पताल धौलपुर रेफर कर दिया। वही दूसरा मामला आज दिन में सुबह 11 बजे का है। जहां शहर के पांच चौक की हवेली के पास रहने वाली एक 18 वर्षीय युवती को अचेत अवस्था मे परिजन अस्पताल लेकर पहुंचे। परिजनों ने बताया कि युवती ने किसी विषाक्त का सेवन कर लिया है। ऐसे में उसे तुरंत उपचार दिया गया। जब हालात में सुधार नहीं हुआ तो धौलपुर रेफर किया है। युवती ने विषाक्त का सेवन क्यों किया है इसका पता नहीं लग सका है।

धौलपुर में बसपा करेगी पार्टी को मजबूतः गढ़ी सुक्खा में जोन प्रभारी ने ली कार्यकर्ताओं की बैठक, कहा- ज्यादा से ज्यादा युवाओं को जोड़ें

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी (राजू शर्मा)। बाड़ी उपखण्ड के कंचनपुर थाना क्षेत्र के गढ़ी सुक्खा गांव में बहुजन समाज पार्टी की बैठक आयोजित की गई। बैठक में भरतपुर जोन प्रभारी मोती सिंह पार्षद मुख्य अतिथि थे। बैठक में जिला प्रभारी राजेंद्र बीजल, जिला महासचिव रविंद्र कोमल और विधानसभा अध्यक्ष बाड़ी अचल सिंह ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष किशन सिंह अजानिया ने की। कार्यकर्ताओं को बसपा प्रमुख मायावती के दिशा-निर्देश बताए गए। सेक्टर और बूथ स्तर पर पार्टी की मजबूती के लिए युवाओं को जोड़ने और उन्हें जिम्मेदारी देने का निर्णय लिया गया। इस दौरान छत्रपति शाहू महाराज की जयंती भी मनाई गई। कार्यक्रम में पूर्व जिला प्रभारी बृजेश सोनी, धौलपुर विधानसभा अध्यक्ष नारायण सिंह शेखर, विधानसभा प्रभारी लोकेंद्र बौद्ध, सौरभ बौद्ध और अनिल कुमार मौजूद थे। इसके अलावा पूर्व सरपंच विजेंद्र सिंह, अरविंद बौद्ध, रनवीर सिंह, हरिलाल, रामसेवक, अरुण ठेकेदार, सुरेंद्र सिंह समेत कई कार्यकर्ता और ग्रामीण उपस्थित रहे।

शहर के सड़क मार्गो पर दो सड़क हादसे, ननद-भाभी के साथ तीन महिला घायल

एक महिला की हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल किया रेफर

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी (राजू शर्मा)। उपखंड से गुजर रहे हाईवे 11 बीं और बसेड़ी रोड पर शुक्रवार को दिन में दो अलग-अलग सड़क हादसे सामने आए हैं। दोनों दुर्घटनाओं में तीन महिलाएं घायल हुई हैं। जिनमें एक महिला की हालत गंभीर होने पर बाड़ी अस्पताल से जिला अस्पताल धौलपुर रेफर किया है। जानकारी के अनुसार पहली सड़क दुर्घटना धौलपुर रोड पर सरमथुरा स्टोन के पास हुई है। जहां आगरा से किसी रिश्तेदारी में गमी में शामिल होकर लौट रही सरमथुरा निवासी महिला आरती पत्नी राजवीर कहार अचानक बाइक के असंतुलित होने से सड़क पर गिर गई। दुर्घटना में घायल हुई महिला को बाड़ी अस्पताल लाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर हालत में जिला अस्पताल धौलपुर रेफर किया है। वहीं दूसरी सड़क दुर्घटना बसेड़ी रोड पर है बटेश्वर कला गांव के पास हुई है। कछपुरा गांव निवासी राजन देई अपने बेटे हरभजन के साथ अपनी नंद राधिका को लेकर धौलपुर जा रही थी। इस दौरान जैसे उनकी बाइक बटेश्वर गांव के पास पहुंची राजन देई की साड़ी बाइक के पिछले पहिए में फंस गई। ऐसे में राजन देई और राधिका एक साथ सड़क पर गिर गई। दुर्घटना में राजन देई और राधिका दोनों घायल हो गए। जिन्हें आसपास के लोगों ने निजी साधन से बाड़ी अस्पताल पहुंचाया। जहां उनका उपचार किया जा रहा है।

अंबेडकर विकास मंच के पदाधिकारियों ने सौंपा ज्ञापन

निवाई(का.स.)। अंबेडकर विकास मंच ने मुख्यमंत्री के नाम उपखण्ड अधिकारी अनीता खटीक को प्रधान की ढाणी सीन्दरा में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की मूर्ति को खंडित कर अपमानित करने वाले असामाजिक तत्वों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करने एवं सरकारी खर्चे पर नई प्रतिमा लगवाने का ज्ञापन सौंपा है। ज्ञापन में बताया कि प्रधान की ढाणी में निवास करने वाले बाबा साहेब एवं राष्ट्रभक्तों ने अपने खर्च पर भारत रत्न बाबा साहेब की प्रतिमा लगवाई थी। लेकिन असामाजिक तत्वों ने प्रतिमा की नाक,अंगुली, चश्मा एवं पीठ पर कई जगह चोटें पहुंचा रखी है। इस बाबत बरोनी थाना में रिपोर्ट दर्ज करवाई जा चुकी है। लेकिन प्रशासन द्वारा अब तक आरोपियों पर कार्रवाई नहीं की गई है जिससे ग्रामवासियों एवं अंबेडकर विकास मंच में भारी रोष है। प्रशासन से अनुरोध है कि है कि आगामी तीन दिवस में अपराधियों को गिरफ्तार किया जाए एवं 15 दिवस में प्रशासन के खर्च पर नई मूर्ति लगवाई जाए। यदि समय पर कार्यवाही नहीं होती है तो धरना प्रदर्शन किया जाएगा। इस दौरान शंकरलाल हाथीवाल, बाबूलाल कंवरिया, अध्यक्ष कमलेश किराड़, हेमराज वर्मा, किशन संगत, हरिनारायण, कैलाश चंद बैरवा, एडवोकेट बनवारीलाल बैरवा, शंकरलाल बैरवा, रामप्रसाद बैरवा, रामजीलाल, रामस्वरूप, गोपाल, कल्याण, भागचंद, हंसराज, भवानीशंकर, दिलराज, राजेश, मोतीलाल, लड्डू लाल ,हेमराज, तेजपाल, शंकर, लोकेश, लक्ष्मी नारायण, सुरेश, रमेश, हंसराज, गजानंद, रामफूल, रामप्रसाद, दीपचंद, सुनील, चंद्रदीप, बुद्धि प्रकाश व रामकरण सहित कई लोग मौजूद थे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल शिविरों का आयोजन जारी

चौथे दिन हुआ उपखंड की ग्राम पंचायत कांसपुरा, टोटरी और गढ़ी खिराना में आयोजन

बढ़ता राजस्थान

बाड़ी (राजू शर्मा)। राजस्थान सरकार द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत उपखंड के ग्रामीण क्षेत्र में विभिन्न समस्याओं के समाधान को लेकर राजस्य सरकार और जिला कलेक्टर के निर्देश पर विभिन्न ग्राम पंचायतो में राजस्व शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। मंगलवार 24 जून से शुरू हुए यह शिविर 9 जुलाई तक चलेंगे। चौथे दिन शुक्रवार को शिविरो का आयोजन उपखंड की ग्राम पंचायत कांसपुरा, टोटरी और गढ़ी खिराना में किया गया। शिविरों में उपखंड अधिकारी भगवत शरण त्यागी, तहसीलदार उत्तम बंसल के साथ विभिन्न विभागों के अधिकारी सरपंच, ग्रामीण जनप्रतिनिधि एवं ग्राम पंचायत अधिकारी मौजूद रहे। पंचायत समिति के विकास अधिकारी हेमंत घनघोर ने बताया की शुक्रवार को आयोजित हुए शिविर में राजस्व, कृषि, ऊर्जा, चिकित्सा, पशुपालन, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, पंचायती राज ,आयुर्वेद एवं सूचना एवं अभियांत्रिकी विभाग सहित कई विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। जिसमें आमजन की समस्याओं का मौके पर निस्तारण किया गया। शिविर के दौरान पेंशन सत्यापन के 26 मामले निस्तारित कराये गए वही वही ग्रामीण किसानो के 15 मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाये गए। 121 ग्रामीणों का चिकित्स्कों की टीम द्वारा मेडिकल चेकअप किया गया। वही 30 पशुओं की स्वास्थ्य जांच कर दवा दी गई। शिविर आयोजन को लेकर तहसीलदार उत्तम चंद बंसल ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है। इस पखवाड़े के तहत 24 जून से 9 जुलाई तक विभिन्न ग्राम पंचायत में शिविरो का आयोजन किया जायेगा।शुक्रवार को उपखंड की ग्राम पंचायत कांसपुरा,टोटरी और गढ़ी खिराना में शिविरों का आयोजन किया गया। शनिवार को ग्राम पंचायत पुरा उलावटी,सुरोठी और धनौरा में शिविरों का आयोजन किया जायेगा।

श्री सीताराम जी की रथ यात्रा का जगह-जगह हुआ भव्य स्वागत

बढ़ता राजस्थान

वैर/भरतपुर (गोपाल पाठक)। हर साल की तरह इस बार भी श्री सीताराम जी की रथ यात्रा कस्बे के प्रमुख मार्गो से होकर निकली। जिसका श्रद्धालियों ने भव्य स्वागत किया। रथ यात्रा में रथ खीचने के दौरान दुकानदारों के जेब कटने की भी जानकारी प्राप्त हुई है। श्री सीताराम जी के मंदिर से रथ यात्रा 10 बजे बैंड बाजे के साथ प्रारंभ हुई जो गोपाल जी मंदिर, मुख्य मार्केट, खिड़की दरवाजा, बयाना दरवाजा, नया बस स्टैंड, भुसावर गेट होकर वापिस शाम 5 बजे मंदिर पहुंची। रथ यात्रा का श्रद्धालुओं ने जगह-जगह प्रसाद लगाया एवं आरती उतारी, पुष्प वर्षा की तथा श्रद्धालुओं द्वारा शिकंजी जलपान, शरबत आदि की व्यवस्था की गई थी। रथ यात्रा में भारी संख्या में श्रद्धालु साथ चल रहे थे रथ में श्री सीता राम जी की प्रतिमाएं विराजमान थी जिनका श्रद्धालियों ने दर्शन लाभ कर मनौतिया मागी। रियासत काल से यह परंपरा चली आ रही है पहले लकड़ी के रथ पर भगवान को विराजमान कर रस्सियो से खींचा जाता था अभी भी इस परंपरा को निभाया जा रहा है। यह रथ यात्रा जगन्नाथ पुरी की तर्ज पर होती है । लगभग 280 साल पहले महाराज सूरजमल के छोटे भाई राजा प्रताप सिंह ने वैर बसाया था उसी समय प्रताप दुर्ग, प्रताप फुलवारी और सीताराम जी मंदिर का निर्माण हुआ था तभी से मंदिर से रथ यात्रा का आयोजन होता आया है। रथ यात्रा देखने के लिए आसपास के ग्रामीण इलाकों से श्रद्धालु भारी संख्या में आते हैं। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार रथ यात्रा के दौरान बडी संख्या में दुकानदारों के जेब कटने की जानकारी भी सामने आई है। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार मोहन कपड़े वाला के 4000, लोकेंद्र मेडिकल वाले के 13800 रूपये, बनवारी कपड़ा वाले के 2500 एवं एक चाट वाले के 600 सहित काफी संख्या में दुकानदारों के जेब कटने की बात सामने आ रही है। पुलिस द्वारा इसकी पुष्टि नहीं की गई है। दुकानदारों से मिली जानकारी के अनुसार लगभग दो ढाई लाख रुपए की जेब तरासी हुई है। दुकानदारों ने इसकी सूचना पुलिस थाना वैर को भी दिया जाना बताया है। प्रथम बार हुई जेब कटी की घटना होने से दुकानदारों में भारी रोष व्याप्त है।

तहसीलदार नरेशकुमार गुर्जर के नेतृत्व में श्री बद्रीनाथधाम नटवाड़ा मंदिर के खोले दान पात्र

बढ़ता राजस्थान

निवाई(का.स.)। नाटेश्वर नगरी श्री बद्रीनाथधाम नटवाड़ा में उपखंड प्रशासन के आदेशानुसार तहसीलदार नरेशकुमार गुर्जर के सानिध्य में दो दान पात्रों को खोला गया। दोनों दान पात्रो से 2 लाख 62 हजार रुपए की राशि प्राप्त हुई जिसको श्री बद्रीनाथ प्रबंध एवं विकास समिति (ट्रस्ट) के बैंक खाते में जमा करवाई गई है। श्री बद्री विशाल मंदिर में यह पात्र पिछले 4 साल से बंद थे। दान पात्रों को खोलने के लिए शुक्रवार को निवाई तहसीलदार नरेश गुर्जर मय पुलिस जाप्ते के मंदिर पहुचे मंदिर में तहसीलदार के नेतृत्व में राजस्व विभाग की 5 सदस्यीय टीम ने श्री बद्रीनाथ प्रबंध एवं विकास समिति (ट्रस्ट) के पदाधिकारी एवं ग्रामीणों के समक्ष दान पात्रों को खोलने की प्रक्रिया शुरू की। दान पात्रों की चाबी मिलने के कारण दोनों दान पात्रों का ताला खोलने के लिए मिस्त्री को बुलाकर ताला खुलवाया गया वही एक दानपात्र स्टील की रेलिंग के सहारे फिक्स होने के कारण लोहा कटर से काटकर अलग किया गया। इसके बाद राजस्थान ग्रामीण बैंक की सहायक प्रबन्धक टीना जैन की मौजूदगी में ग्रामीणों की मदद से दान पात्रों से प्राप्त दान राशि की गणना की। गौरतलब है कि मंदिर के अंतिम महंत तेजभारती गोस्वामी का 19 जनवरी 2021 को देहान्त होन के बाद से ही विभिन्न पक्षों द्वारा मंदिर की देखरेख के लिए कोर्ट में प्रकरण विचारधीन है।

3 घंटे बिजली बंद रहेगी

बढ़ता राजस्थान

निवाई(का.स.)। विद्युत मरम्मत कार्य के चलते शनिवार को 3 घंटे बिजली सप्लाई बंद रहेगी। कनिष्ठ अभियंता धनराज यादव ने बताया कि 33 केवी जीएसएस पर मरम्मत कार्य किया जाएगा। जिसके चलते शहर में सुबह 7 बजे से 10 बजे तक बिजली सप्लाई पूर्ण तैयार बंद रहेगी। मरम्मत कार्य के चलते अहिंसा सर्किल फीडर से निकलने वाली विद्युत सप्लाई के जिरात रोड़, शिवाजी पार्क रोड, भगतसिंह कॉलोनी, अहिंसा सर्किल, सिंधी कॉलोनी व घाटी मोहल्ला सहित आसपास के क्षेत्र में विद्युत सप्लाई पूर्णतया बंद रहेगी।

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान में गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की हुई जाँच, मिला उपचार

जयपुर। जिले मे शुक्रवार को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य की जांच की गई। जिसमें उच्च जोखिम वाली गर्भवती महिलाओं को चिन्हित कर उनका ईलाज करने के साथ पोषण युक्त आहार की जानकारी प्रदान की गई। गौरतलब है कि राज्य स्तर के निर्देशानुसार अब प्रत्येक माह की 09, 18 व 27 तारीख को प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान का आयोजन किया जा रहा है।

भारत विकास परिषद के संस्थापक की 105 वीं जयंती पर वाटर कूलर का शुभारम्भ

बढ़ता राजस्थान

भुसावर (यतेन्द्र पाण्डेय)। भारत विकास परिषद की स्थानीय शाखा की ओर से संस्थापक डा. सूरज प्रकाश की 105वीं जयंती के उपलक्ष्य में लवकेश सैनी के सौजन्य से कस्बे के हिण्डौन मार्ग पर वाटर कूलर का शुभारम्भ किया गया। शाखा सचिव डा. विजय पहाडिया व कोषाध्यक्ष राजेश गोयल ने जानकारी देते हुए बताया कि भारत विकास परिषद के संस्थापक डा. सूरज प्रकाश की 105वीं जयंती के उपलक्ष्य में महेन्द्रसिंह सैनी के मुख्य आतिथ्य शाखा अध्यक्ष मनीष मित्तल की अध्यक्षता में कस्बे के हिण्डौन मार्ग पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ भारत माता, स्वामी विवेकानंद व डा. सूरज प्रकाश जयंती की तस्वीर पर दीप प्रज्जवलन व पुष्प अर्पित कर किया गया। इस अवसर पर कस्बे के हिण्डौन मार्ग स्थित पुरानी चुंगी के पास राहगीरों व आमजन की सुविधा के लिए लवकेश सैनी के सौजन्य से वाटर कूलर का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने बताया कि डा. सूरज प्रकाश ने 10 जुलाई 1963 को भारत विकास परिषद की स्थापना की, जिसकी शाखायें पूरे देश में स्वस्थ समर्थ संस्कारित भारत के उददेश्य को लेकर विभिन्न प्रकल्पों के अंतर्गत सक्षम वर्ग द्वारा जरूरतमंद व्यक्तियों तक मदद पहुंचाने का कार्य कर रही हैं। कार्यक्रम में भामाशाह परिवार का दुपटटा पहनाकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर शाखा के वरिष्ठ सदस्य सुभाष सिंघल, शेरसिंह सैनी, चंद्र प्रकाश आर्य, दिलीप सिंघल, वेदप्रकाश शर्मा, बृजेश जिंदल, हरिकृष्ण, निक्कू सोनी, आदि मौजूद रहे।

सफलता की कहानी, काश्तकार की जवानी

उबढ़ता राजस्थान

भरतपुर (यतेन्द्र पाण्डेय)। पंडित दीनदयाल उपाध्याय संभल पखवाड़ा शिवरो की श्रृंखला में उसे समय खुशी का माहौल दौड़ गया जब भुसावर उपखंड न्यायालय अधीन राजस्थान काश्तकारी राजस्व मंडल नियम 1955 के नियम 18 21 के अनुसार कस्तूरी सोमदेव पुत्री सुख चांदी जाटव निवासी महमदपुर ग्राम पंचायत बबेखर को उनके न्यायालय में चल रहे 2019 के प्रवास में मौके पर ही उपखंड अधिकारी द्वारा निस्तारण कर राहत पहुंचाई दोनों बहनों के साथ उनके परिवार के खुशी का ठिकाना नहीं था! किस्तूरी, सोनदेई पुत्री सुखचन्दी जाति जाटव निवासी महमदपुर ग्राम पंचायत बबेखर तह. भुसावर की पैत्रिक खातेदारी भूमि रकवा 0.42 है0 जो काफी समय से न्यायालय उपखण्ड अधिकारी भुसावर में प्रकरण संख्या 77/19 के द्वारा विचाराधीन था। न्यायालय में प्रकरण विचारधीन होने के कारण दोनो पक्षों के समय, और पैसे की बर्बादी होती थी। तभी हमें मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर आयोजित होने बाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय संबल पखवाडा के बारे में पटवार मण्डल बबेखर के पटवारी द्वारा जानकरी मिली और हम राजीव गांधी सेवा केन्द्र, ग्राम पंचायत बबेखर पर आयोजित शिविर में 27.06.2025 को पहुंचे। यहां हम कैम्प प्रभारी उपखण्ड अधिकारी से मिले उन्होने हमें आपसी सहमति/ समझाईस से भूमि का विभाजन के बारे में जानकारी दी और हम सभी पक्षकार आपसी सहमति से न्यायालय के निर्णय के लिए तैयार हुए शिविर में उपस्थित राजस्व अधिकारियो/ कर्मचारियों द्वारा आपसी सहमति से न्यायालय के निर्णय की समस्त कार्यवाही मौके पर ही पूर्ण करवाई और पंडित दीनदयाल उपाध्याय संबल पखवाडा के शिविर में बहुत आसानी से न्यायालय द्वारा निर्णय से भूमि का विभाजन हो गया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय संबल पखवाड़ा शिविर में हमें घर बैठे न्याय मिला जिसके लिए हम 2019 से न्यायालय के चक्कर लगा रहे थे इसके लिए देश के प्रधानमंत्री एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री का तहे दिल से आभार व्यक्त करते हैं। जिन्होंने एक आम आदमी की समस्या को देखते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय संबल पखवाडा में विभिन्न योजनाओं की सुविधा ग्राम पंचायत स्तर पर चलाई। हम शिविर में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीयों एवं अपने ग्राम पंचायत के अधिकारी व कर्मचारियों का भी धन्यवाद करते हैं जिन्होंने हमें बिना किसी परेशानी के शीघ्र ही योजना का लाभ प्रदान

धौलपुर में 5 हजार ट्रॉली बजरी स्टॉक नष्ट

बढ़ता राजस्थान

धौलपुर। धौलपुर में सुप्रीम कोर्ट की ओर से प्रतिबंधित चंबल बजरी के खिलाफ पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। एसपी सुमित मेहरड़ा के नेतृत्व में चलाए गए इस अभियान में 50 से अधिक पुलिस वाहन और 37 जेसीबी मशीनें लगाई गईं। मोरोली गांव में की गई कार्रवाई में पुलिस, खनिज विभाग, वन विभाग और बिजली विभाग की टीमें शामिल रहीं। कोतवाली थाना प्रभारी हरिनारायण मीणा के अनुसार, यहां से 5 हजार से अधिक ट्रॉली चंबल बजरी का अवैध स्टॉक मिला। जेसीबी मशीनों की मदद से इस पूरे स्टॉक को नष्ट कर दिया गया। बिजली विभाग ने भी अवैध कनेक्शन और बकाया बिल वाले क्षेत्रों से ट्रांसफॉर्मर हटाने की कार्रवाई की। कोतवाली थाने के सब इंस्पेक्टर अशोक सिंह ने बताया कि जिले के सभी थानों की पुलिस को कार्रवाई में शामिल किया गया। यह अभियान सुबह से शुरू होकर देर शाम तक चला।

जमीन बंटी, रिश्ते जुड़े : अंत्योदय शिविर बना चार भाइयों में सहमति से बंटवारे का जरिया

बढ़ता राजस्थान

धौलपुर (राजू शर्मा)। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़ा के तहत ग्राम पंचायत कनासिल में आयोजित शिविर में एक दशक पुराना जमीन का आपसी विवाद आपसी सहमति से सुलझाया गया, जिससे गांव के सामाजिक ताने-बाने में सौहार्द की नई मिसाल कायम हुई। कनासिल निवासी अतरसिंह, जगदीश, मुरारी और विष्णु पिछले लगभग 10 वर्षों से 11 खसरा नंबरों को लेकर विवाद में उलझे हुए थे। भूमि का बंटवारा न हो पाने के कारण ना केवल कानूनी प्रक्रिया लंबित थी, बल्कि आपसी रिश्तों में भी खटास आ गई थी। शिविर में उपस्थित तहसीलदार सैपऊ नाहरसिंह ने जब प्रकरण को सुना, तो उन्होंने चारों भाइयों को आपसी सहमति से बंटवारे के लिए प्रेरित किया। इस दौरान परिवार के सदस्यों ने आगे बढ़कर भाईचारे की मिसाल पेश की और गिले-शिकवे मिटाकर सहमति से बंटवारे की पहल की। शिविर में ही भू-अभिलेख निरीक्षक गोपीचन्द और हल्का पटवारी अरविंद कुमार ने मौके पर सहमति विभाजन की प्रक्रिया पूरी की। तत्पश्चात तहसीलदार सैपऊ द्वारा राजस्व रिकॉर्ड में परिवर्तन संबंधी आदेश जारी कर दिए गए, जिससे विवाद का पूर्ण समाधान सुनिश्चित हो गया। मैंने कभी नहीं सोचा था कि हमारी जमीन का मामला इस तरह सहजता से हल हो जाएगा। आज हम चारों भाई संतुष्ट हैं। शिविर में उपस्थित ग्रामीणों एवं जनप्रतिनिधियों ने भी इस समाधान को सराहा और कहा कि सरकार की ऐसी पहलें न केवल प्रशासन और जनता के बीच पुल का काम करती हैं, बल्कि गांवों में सामाजिक सौहार्द और विकास का रास्ता भी खोलती हैं। समस्त पक्षकारों ने शिविर से मिले त्वरित समाधान के लिए राज्य सरकार एवं जिला प्रशासन का आभार प्रकट किया।

रश्मिका मंदाना बनीं मैसा, फिल्म के पोस्टर में दिखा गुस्से से दहलता उनका विकराल रूप, जो पहले कभी नहीं देखा

रश्मिका मंदाना की नई फिल्म %मैसा% का लुक जारी हो गया है। रश्मिका इसमें एक योद्धा के किरदार में दिखेंगी। फिल्म का निर्देशन रविंद्र पुल्ले ने किया है। रश्मिका ने कहा कि यह किरदार उनके लिए नया है। %मायसा% गोंड जनजाति की कहानी है।पैन इंडिया की सबसे बड़ी हीरोइन रश्मिका मंदाना देशभर में जबरदस्त फैनबेस एन्जॉय करती हैं और फैंस बेसब्री से इंतजार करते हैं कि वो आगे क्या करने वाली हैं। गुरुवार रिलीज हुए दिलचस्प पोस्टर के बाद, रश्मिका मंदाना की अगली फिल्म %मैसा% से उनका लुक लॉन्च हुआ, जहां इंडस्ट्री के कई सितारों ने इस शुक्रवार सुबह उनका पोस्टर रिलीज किया। पुष्पा 2= द रूल के बाद रश्मिका एक और पैन इंडिया फिल्म मैसा के साथ तैयार हैं।

अनफॉर्मूला फिल्म्स के बैनर तले बनी मैसा एक ऐसी कहानी लग रही है जिसमें एक महिला योद्धा की हिम्मत और जज़्बे को दिखाया गया है। फिल्म का पोस्टर वाकई %अब तक कभी न देखा गया% लुक देता है, जिसमें रश्मिका मंदाना के चेहरे का तेज और जज्बा साफ नजर आता है।

द फैमिली मैन 3 का पहला अनाउंसमेंट वीडियो जारी, मनोज बाजपेयी के साथ जयदीप अहलावत, निमरत कौर की भिड़ंत

स्पाई थ्रिलर सीरीज %द फैमिली मैन% की सीजन 3 का पहला अनाउंसमेंट वीडियो जारी हो चुका है जिसमें मनोज बाजपेयी अपने खतरनाक मिशन पर हैं। इस बाक उनका सामना जयदीप अहलावत और निमरत कौर से होता है। इसी के साथ राज और डीके की इस सीरीज में मनोज बाजपेयी की आम फैमिली मैन वाली इमेज भी बड़ी खूबसूरती से दिखाई गई है।

ओटीटी पर भारतीय दर्शकों के फेवरेट शोज़ में से एक %द फैमिली मैन% अपने तीसरे सीजन के साथ एक बार फिर लौट रहा है। मनोज बाजपेयी अपने जाने-पहचाने श्रीकांत तिवारी वाले किरदार में फिर हमारे घरों में दस्तक देने जा रहे हैं और इस सीजन का पहला अनाउंसमेंट वीडियो जारी किया जा चुका है। हालांकि, इस वीडियो में सीजन के जल्द आने की बात जरूर है लेकिन रिलीज डेट को लेकर अनाउंसमेंट का अभी भी इंतजार है। %द फैमिली मैन 3% के मेकर्स ने फैंस को शुक्रवार के दिन एक बड़ा सरप्राइज देते हुए इसकी एनाउंसमेंट वीडियो शेयर की है, जो प्राइम वीडियो के यूट्यूब चैनल पर है। राज और डीके के प्रोडक्शन हाउस डी2आर फिल्म्स के बैनर तले बनी ये सीरीज ओटीटी पर सबसे चर्चित और इंटरनैशनल लेवल पर पसंद किए जाने वाले ओरिजिनल शो में से एक बन गई है। इस जबरदस्त स्पाई थ्रिलर में मनोज बाजपेयी ने श्रीकांत तिवारी की भूमिका निभाई है, जो एक खुफिया एजेंट हैं। हालांकि इसी के साथ देश की रक्षा करने वाले श्रीकांत एक बेहद मिडल क्लास फैमिली में एक अच्छे पिता और पति की अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते हैं।

सलमान खान ने बताया, एक दिन में खाते हैं एक चम्मच चावल, कुछ सब्जियां और चिकन, पापा सलीम का होता है भरपूर खाना

सलमान खान हाल ही में द ग्रेट इंडियन कपिल शो% में नजर आए, जहां उनकी फिटनेस देखकर लोग एक बार फिर से दंग रह गए। सलमान खान ने अपने डायट से जुड़े राज खोले और बताया कि वो दिन भर में एक चम्मच चावल खाते हैं। वहीं पिता सलीम खान के बारे में कहा- वो अभी भी दिन में दो बार 2-3 पराठे, चावल, मीट और मिठाई खाते हैं।

सलमान खान कुछ समय पहले एक डांस परफॉर्मेंस के दौरान बाहर निकले पेट को लेकर काफी सुर्खियों में रहे थे। लोगों ने उनकी फिटनेस पर उंगलियां उठानी शुरू कर दी। वहीं हाल ही में %द ग्रेट इंडियन कपिल शो% में नजर आए सलमान खान बिल्कुल फिट नजर आए। इस शो के दौरान सलमान खान ने अपनी डायट का जिक्र तो किया ही साथ ही 89 की उम्र में अपने पिता सलीम खान के खान-पान की बी बातें बताई। सलमान खान अपने खान-पान का काफी ध्यान रखते हैं। उन्होंने अपने बारे में बताने के साथ-साथ पिता सलीम खान के बारे में भी बताया जो इस उम्र में भी रोजाना बैंडस्टैंड पर वॉक करते हैं।

कमल हासन, आयुष्मान खुराना को ऑस्कर एकेडमी ने भेजा मेंबर बनाने का न्योता, पायल कपाड़िया का नाम भी शामिल

ऑस्कर अवॉर्ड देने वाली संस्था %एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज ने भारतीय सिनेमा के दो शानदार कलाकारों कमल हासन, आयुष्मान खुराना के अलावा ड्यूसर और राइटर पायल कपाड़िया को अपना सदस्य बनाने के लिए इन्वाइट भेजा है।इंडियन सिनेमा लगातार दुनिया के मंच पर अपनी चमक को और निखारता जा रहा है। खबर है कि इंडियन सिनेमा के दो शानदार सितारे कमल हासन और आयुष्मान खुराना को ऑस्कर अवॉर्ड्स ने अपना सदस्य बनाने के लिए इन्वाइट भेजा है। एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज में शामिल होने के लिए इन दोनों भारतीय सितारों को न्योता भेजा गया है। अब वे एरियाना ग्रांडे , सेबेस्टियन स्टेन और जेरेमी स्ट्रॉन्ग जैसे बड़े इंटरनैशनल नामों के साथ इस इन्विटेशन लिस्ट का हिस्सा हैं।ऑस्कर अवॉर्ड देने वाली संस्था %एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज ने भारतीय सिनेमा के मशहूर एक्टर्स कमल हासन, आयुष्मान खुराना और फिल्म प्रड्यूसर और राइटर पायल कपाड़िया को मेंबरशिप के लिए इन्विटेशन भेजा है। इस साल एकेडमी ने सभी के योगदान को देखते हुए 534 कलाकारों और फिल्म से जुड़े लोगों को अपना सदस्य बनने का न्योता भेजा है।

मुझसे गलती हुई, आगे नहीं होगा, शेखर सुमन ने दिलजीत दोसांझ को दी माफी मांगने की सलाह, बोले- सीख लेनी चाहिए

दिलजीत दोसांझ की फिल्म में पाकिस्तानी एक्ट्रेस हानिया आमिर हैं, जिस कारण उन्हें आलोचना झेलनी पड रही है। शेखर सुमन ने दिलजीत दोसांझ से माफी मांगने को कहा है।

पहलगाम हमले के बाद भारत में पाकिस्तानी कलाकारों को बैन कर दिया गया। मगर %सरदार जी 3% में पाकिस्तानी एक्ट्रेस हानिया आमिर के होने के कारण दिलजीत दोसांझ को काफी कुछ सुनना पड़ रहा है। अब शेखर सुमन ने भी रिएक्ट किया है। उन्होंने पाकिस्तान के साथ किसी भी तरह के संबंध बनाने यानी फिर चाहे वो कल्चरल हो या फिर बिजनेस कोलैबोरेशन, हर मायने में सावधवानी बरतने को कहा है। उन्होंने इंटरव्यू में दिलजीत दोसांझ से माफी मांगने के लिए भी कहा है। दिलजीद दोसांझ के विवाद पर शेखर सुमन ने %हिंदुस्तान टाइम्स से बातचीत में कहा, मुझे इतना कुछ पता नहीं कि आखिर हुआ क्या है। लेकिन इतना जानता हूं कि दिलजीत ने एक पाकिसानी एक्ट्रेस के साथ काम किया और वो बोल रहे हैं कि उनकी कास्टिंग पहलगाम हमले से पहले हुई थी।

बॉर्डर 2 से नहीं निकाले जाएंगे दिलजीत दोसांझ, सरदार जी 3 विवाद के बीच हुआ दावा- हटाने का नहीं है कोई प्लान

दिलजीत दोसांझ हानिया आमिर की वजह से आलोचना झेल रहे हैं। सरदार जी 3 की रिलीज को लेकर विवाद है। फिल्म संगठनों ने दिलजीत पर बैन लगाने की मांग की है। बॉर्डर 2 से हटाने की भी मांग उठी है, पर मेकर्स ने इनकार किया है। एफडब्लूआईसीई ने भूषण कुमार और सनी देओल को पत्र लिखा है।

दिलजीत दोसांझ इस वक्त हानिया आमिर के कारण आलोचनाओं का शिकार हो रहे हैं। वह %सरदार जी 3% को विदेश में रिलीज करने के लिए मुश्किलों में घिरे हुए हैं। हर दूसरा कलाकार एक्टर को सलाह दे रहा है। उनके इस फैसले की निंदा कर रहा है। यहां तक कि फिल्म ऑर्गनाइजेशन्स ने भी दिलजीत पर बैन लगाने की मांग की है। इसकी आग इतनी तेज भड़की है कि लपटें बॉर्डर 2 तक पहुंच गई हैं।खबर थी कि दिलजीत दोसांझ को उनकी अपकमिंग मूवी बोर्डर 2 से हटाने की मांग हो रही है। लेकिन %हिंदुस्तान टाइम्स% ने सोर्स के हवाले से दावा किया है कि अभी तक ऐसा कोई फैसला नहीं लिया गया है। एक्टर को हटाने या फिर उन्हें रिप्लेस करने की कोई योजना नहीं है। इस विवाद के होने से 9 महीने पहले ही उनकी कास्टिंग की गई थी। इतना ही नहीं, सनी देओल स्टारर फिल्म की 40-50 प्रतिशत शूटिंग हो चुकी है और अब ऐसे में मूवी में इतना बड़ा फैसला लेना संभव नहीं।

RNI NO. RAJHIN/2013/52026
POSTAL REG NO. TONK/49/2022-24
दैनिक बढ़ता राजस्थान

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान बोले-नकली खाद-बीज बनाने वालों को छोड़ेंगे नहीं

राजस्थान में अभी छापे पड़े, हम कड़ा कानून बनाएंगे; किरोड़ी बोले- तेज होगा अभियान

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स)। नकली और अमानक खाद-बीज, पेस्टिसाइड कंपनियों पर कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा को अब केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान का साथ मिल गया है। शिवराज ने किरोड़ी के छापों का जिक्र करते हुए नकली खाद-बीज बनाने वालों पर कड़ी कार्रवाई करने की बात कही। इनके खिलाफ कड़ा कानून बनाने की भी बात कही है।किरोड़ीलाल ने इसी सप्ताह शिवराज सिंह को चिट्ठी लिखकर नकली खाद-बीज, पेस्टिसाइड बनाने वालों के खिलाफ कड़ा कानून बनाने की मांग की थी।शिवराज सिंह ने दिल्ली में कहा- किसानों की बात वाजिब है कि दवाई खरीदने गए तो पता ही नहीं असली है या नकली। फर्टिलाइजर, खाद डाल रहे हैं। पता ही नहीं पड़ रहा है। अमानक स्तर के पेस्टिसाइड और खाद बन रहे हैं। राजस्थान में भी अभी छापे पड़े।

किरोड़ी बोले- नकली खाद-बीज के खिलाफ अभियान तेज होगा

शिवराज के बयान के बाद किरोड़ीलाल ने खुशी जाहिर करते हुए राजस्थान में छापेमारी अभियान को और तेज करने की घोषणा की है। किरोड़ीलाल ने ङ्क पर लिखा- केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह के इस बेबाक बयान से राजस्थान में अमानक बीज-खाद व कीटनाशक के खिलाफ चल रहा अभियान और सशक्त होगा।किसानों के साथ दगा करने वालों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। यह सुखद है कि इसके लिए कड़ा कानून तैयार हो रहा है। मैंने भी यही मांग की थी।

इसमें शामिल हर चेहरे को बेनकाब करना जरूरी

किरोड़ी ने लिखा- अमानक बीज-खाद व कीटनाशक बनाना और बेचना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के किसानों की आय को दोगुनी करने के संकल्प को विफल करने की गहरी साजिश का हिस्सा है। इसमें शामिल हर चेहरे को बेनकाब करना जरूरी है। ताकि किसान भाइयों को गुणवत्तापूर्ण बीज, खाद व कीटनाशक मिल सके।बता दें कि कृषि मंत्री किरो?ीलाल ने पिछले दिनों जयपुर, उदयपुर, श्रीगंगानगर सहित कई शहरों में अमानक खाद-बीज और कीटनाशक बनाने वाली फैक्ट्रियों पर छापे मारे थे। सैंपल लेकर कई जगह गोदाम भी सील किए गए।

कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ीलाल मीणा गुरुवार को उदयपुर में खाद बनाने वाली एक फैक्ट्री पर छापा मारा। इस फैक्ट्री में सिंगल सुपर फास्फेट (स्सक्) खाद बनाया जाता है, जिसमें बडे स्तर पर मिलावट होना सामने आया था। मंत्री ने खाद के सैंपल हाथ में लेकर कहा- इसमें मिलावट है। ललित मोदी के परिवार की कंपनी पर किरोडीलाल की छापेमारी-कृषि मंत्री बोले- मैंने पता किया है ये फैक्ट्री-गोदाम किसके हैं; सैंपल लिए, गोदाम सीलकृषि मंत्री डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने राजधानी जयपुर और आसपास 6 पेस्टिसाइड फैक्ट्रियों और उनके गोदामों पर छापा मारकर कई जगह सैंपल लिए। आईपीएल के पूर्व कमिश्नर ललित मोदी के परिवार की कंपनी के गोदाम को सील कर दिया।

अहमदाबाद जगन्नाथ रथयात्रा में हाथी बेकाबू... डीजे और सीटी की आवाज से भड़का

बैरिकेड तोड़कर संकरी गली में भागा; वन विभाग ने काबू किया

बढ़ता राजस्थान

अहमदाबाद (एजेंसी)। बेकाबू हाथी 17 हाथियों के ग्रुप में सबसे आगे चल रहा था। शोर सुनकर वह बेकाबू हो गया। अहमदाबाद में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा में शुक्रवार सुबह 10 बजे एक हाथी बेकाबू हो गया और 100 मीटर तक भागा। इसके बाद रथ यात्रा में भगद? सी मच गई। लोग इधर-उधर भागते दिखे। बेकाबू हुआ हाथी 17 हाथियों के ग्रुप में सबसे आगे चल रहा था। जानकारी के मुताबिक, हाथी डीजे और सीटी की आवाज से बेकाबू हुआ था। हाथी को वन विभाग के अमले ने दो मादा हाथियों की मदद से काबू में किया। इसके बाद उसे और दोनों मादा हाथियों को जुलूस से हटा दिया गया। बाकी यात्रा में 14 हाथी शामिल हुए।शुक्रवार सुबह रथ यात्रा निकल रही थी। खाड़िया क्षेत्र के पास जैसे ही रथ पहुंचा, सबसे आगे चल रहा नर हाथी अचानक उत्तेजित हो गया। तेज आवाज में बज रहे डीजे और सीटी की आवाजों से वह घबरा गया। वह तेजी से दौड़ते हुए पास की पोल गली की ओर 100 मीटर भागा, रास्ते में बैरिकेड्स तोड़ दिए और कई लोगों को गिरा दिया। हालांकि, किसी को गंभीर चोट नहीं आई।

मादा हाथियों की मदद से काबू में किया

वन विभाग के अधिकारी आर.के. साहू ने बताया कि हाथी को काबू करने के लिए दो मादा हाथियों की मदद ली गई। मादा हाथियों की उपस्थिति से नर हाथी शांत हुआ और उसे खाड़िया के पास एक सुरक्षित स्थान पर बांध दिया गया। फिलहाल वह शांत और निगरानी में है। अधिकारी ने बताया कि हाथी को हाथी ही काबू कर सकता है, इसीलिए मादा हाथियों को बुलाया गया।

हाथियों की मेडिकल जांच होती है

रथ यात्रा में सजाए गए हाथी हमेशा एक खास आकर्षण का केंद्र रहे हैं। इस साल रथ यात्रा में शामिल सभी हाथियों की शारीरिक और मानसिक सेहत की पूरी जिम्मेदारी अहमदाबाद जिले के पशुपालन विभाग द्वारा निभाई गई।

23 जून से लगातार निगरानी

अहमदाबाद जिले के उप पशुपालन निदेशक सुकेतु उपाध्याय ने बताया कि 23 जून से हाथियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की लगातार निगरानी की जा रही थी। सभी हाथियों का हेल्थ चेकअप किया गया और उन्हें स्वास्थ्य प्रमाण पत्र (हेल्थ सर्टिफिकेट) भी जारी किए गए। वेटरनरी टीम यह भी तय करती है कि हाथियों को मक्खी या अन्य कीड़े परेशान न करें। यदि कोई बीमारी हो तो उसका समय पर इलाज किया जाता है, ताकि हाथियों की सेहत बनी रहे। अहमदाबाद की रथ यात्रा में कुल 17 हाथी शामिल हुए थे। सभी हाथियों को नियंत्रित रखने के लिए उनके महावत भी मौजूद थे।

अहमदाबाद की रथ यात्रा में कुल 17 हाथी शामिल हुए थे। सभी हाथियों को नियंत्रित रखने के लिए उनके महावत भी मौजूद थे।

डार्ट गन से किया जाता है नियंत्रण

उपाध्याय ने यह भी बताया कि रथ यात्रा के दौरान लगातार तीन दिन तक हाथियों की सेहत पर नजर रखी जाती है। वन विभाग और वेटरिनरी विभाग की टीमें हाथियों के साथ रहती हैं, ताकि उन्हें कोई परेशानी या तनाव न हो। अगर कोई हाथी मानसिक संतुलन या मिजाज खो देता है, तो वन विभाग की टीम डार्ट गन से इंजेक्शन देकर उसे कंट्रोल करती है।

गोविंद देवजी मंदिर से शुरू हुई जगन्नाथ रथ यात्रा:मेयर कुसुम यादव ने झाड़ू लगाई, गुप्त वृन्दावन धाम से निकलेगी दूसरी यात्रा

बढ़ता राजस्थान

जयपुर (का.स)। जयपुर में शुक्रवार को भगवान जगन्नाथ की दो अलग-अलग रथयात्राएं निकलेंगी। पहली रथयात्रा गोविंद देव जी मंदिर के पास से शुरू हो गई है। यह यात्रा विभिन्न मार्गों से होते हुए ब्रज निधि मंदिर तक जाएगी। इस यात्रा में बड़ी संख्या में लोग शामिल हो रहे हैं।इस दौरान नगर निगम हेरिटेज मेयर कुसुम यादव भी रथ यात्रा में पहुंची। वे रथ के आगे झाड़ू लगाते हुए चलीं। भगवान जगन्नाथ की पूजा अर्चना कर प्रदेश की सुख शांति समृद्धि की कामना की। इसके साथ कई युवतियों ने रथ के आगे नृत्य किया।

बड़ी संख्या में लोग रथ यात्रा में शामिल हुए।

दूसरी रथयात्रा गुप्त वृन्दावन धाम द्वारा आयोजित की जा रही है। यह यात्रा जयपुर होटल से शुरू होगी। यात्रा का रूट खासा कोठी पुलिया, गवर्नमेंट हॉस्टल चौराहा, पांच बत्ती सर्किल, अजमेरी गेट, न्यू गेट और अल्बर्ट हॉल म्यूजियम रोड से होते हुए राजस्थान स्काउट और गाइड्स गार्डन पर शाम 8ः15 बजे समाप्त होगा।गुप्त वृन्दावन धाम की रथयात्रा के लिए अहमदाबाद में एक विशेष हाइड्रोलिक रथ तैयार किया गया है। इस रथ की ऊंचाई को बिजली के तारों से बचने के लिए कम-ज्यादा किया जा सकता है। रथयात्रा से पहले गुरुवार को जयपुर के विभिन्न मंदिरों में विशेष मंदिर मार्जन सेवा की गई।मंदिर के अध्यक्ष अमितासना दास ने रथयात्रा की परंपरा के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण को द्वारिका से वृन्दावन वापस लाने के लिए वृन्दावन वासियों ने रथ को अपने हाथों से खींचा था। भक्तों के इस प्रेम को देखकर भगवान कृष्ण भाव विभोर हो गए थे। इसी घटना की याद में हर वर्ष रथयात्रा का आयोजन किया जाता है।

जयशंकर ने खोली पाकिस्तान की पोल, आतंकवाद पर चुप्पी को लेकर खूब सुना दिया

बढ़ता राजस्थान

नई दिल्ली (एजेंसी)। जयशंकर ने सिंह के रुख के बारे में पूछे जाने पर संवाददाताओं से कहा कि आम सहमति से चलने वाले एससीओ का उद्देश्य आतंकवाद से लड़ना है। उन्होंने कहा कि रक्षा मंत्रियों की बैठक के घोषणापत्र पर चर्चा में एक देश ने कहा कि नहीं, हम इसका संदर्भ नहीं चाहते हैं। आप अनुमान लगा सकते हैं कि कौन सा देश रहा होगा। जयशंकर ने कहा कि एससीओ सर्वसम्मति से चलता है लेकिन जब एक दे। पहलगाम आतंकवादी हमले को छोड़ देने और पाकिस्तान समर्थित सीमा पार आतंकवाद पर भारत की चिंताओं को स्पष्ट रूप से संबोधित नहीं करने के बाद रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के

संयुक्त विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर करने से इनकार करने के एक दिन बाद, केंद्रीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को कहा कि भारत एससीओ रक्षा मंत्रियों की बैठक के परिणाम दस्तावेज में आतंकवाद का उल्लेख चाहता था, लेकिन यह एक सदस्य देश को स्वीकार्य नहीं था, जिसमें पाकिस्तान का परोक्ष संदर्भ था। उन्होंने आगे कहा कि इस मामले पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का दृष्टिकोण सही है क्योंकि एससीओ का मुख्य उद्देश्य आतंकवाद से लड़ना है और इसके संदर्भ (आतंकवाद पर भारत की चिंताओं) के बिना, वह परिणाम दस्तावेज को स्वीकार नहीं करेंगे।

एस जयशंकर ने पाकिस्तान का नाम लिये बिना कहा कि शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के रक्षा मंत्रियों की बैठक के घोषणापत्र में भारत आतंकवाद का उल्लेख चाहता था लेकिन एक सदस्य देश को यह स्वीकार्य नहीं था। जयशंकर ने कहा कि इस मामले पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का दृष्टिकोण सही था क्योंकि एससीओ का मुख्य उद्देश्य आतंकवाद से लड़ना है।

चुनाव से 2 महीने पहले ऐसा क्यों? वोटर लिस्ट सत्यापन को लेकर बोले तेजस्वी बोले, नीतीश और मोदी डरे हुए हैं

बढ़ता राजस्थान

नई दिल्ली (एजेंसी)। तेजस्वी से सवाल किया कि चुनाव से 2 महीने पहले ऐसा क्यों किया जा रहा है? क्या 25 दिनों के भीतर आठ करोड़ लोगों की मतदाता सूची बनाना संभव है? मांगे गए दस्तावेज़ ऐसे हैं जो गरीबों के पास शायद ही हों।

भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) ने चुनावी राज्य बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के निर्देश जारी किए हैं। इसका मतलब है कि बिहार के लिए मतदाता सूची नए सिरे से तैयार की जाएगी। अब इसको लेकर सियासत तेज हो गई है। राजद नेता तेजस्वी यादव ने निर्वाचन आयोग पर सवाल खड़े किए है। तेजस्वी यादव ने कहा कि चुनाव आयोग ने बिहार में मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण की घोषणा की है। इसका मतलब है कि 8 करोड़ बिहारियों की मतदाता सूची को दरकिनार कर दिया गया है और एक नई सूची बनाई जाएगी। तेजस्वी से सवाल किया कि चुनाव से 2 महीने पहले ऐसा क्यों किया जा रहा है?

केदारनाथ हाईवे पर लैंडस्लाइड, यात्री फंसे-अहमदाबाद-सूरत में बाढ़, घरों में घुसा पानी; देशभर में सामान्य 12% ज्यादा बारिश

बढ़ता राजस्थान

नईदिल्ली/भोपाल/लखनऊ (एजेंसी)। देश में दिल्ली को छोड़कर सभी राज्यों में बारिश हो रही है। अब तक सामान्य से 12.3 फीसदी ज्यादा बारिश हो चुकी है। 26 जून तक देश में सामान्य रूप से 134.3 मिमी होनी चाहिए थी, लेकिन 146.6 एमएम हो चुकी है। उत्तराखंड में भारी बारिश के चलते केदारनाथ हाईवे एक बार फिर मुनकटिया इलाके में लैंडस्लाइड के कारण बंद हो गया है। रास्ते पर लगातार पत्थर और मलबा गिर रहा है। SDRF और NDRF की टीमें मौके पर मौजूद हैं और यात्रियों को जंगल के वैकल्पिक रास्तों से सुरक्षित निकाल रही हैं।इस बीच देश में बारिश के चलते मौतों का आकड़ा भी बढ़ने लगा है। हिमाचल के कुल्लू जिले में बादल फटने से अब तक 5 लोगों की मौत हो गई है। जबकि 7 से ज्यादा लापता हैं। बुधवार को कुल्लू के 5 जगह- जीवा नाला (सैंज), शिलागढ़ (गढ़सा) घाटी, स्त्रो गैलरी (मनाली), होरनगढ़ (बंजार), कांगडा और धर्मशाला के खनियारा में बादल फटे थे।वहीं, जम्मू-कश्मीर के राजौरी, पुंछ, डोडा और कठुआ जिलों में बादल फटने और तेज बारिश से आई बाढ़ में 2 बच्चों समेत 3 की मौत हो गई है।

ईरानी सुप्रीम लीडर के इस दांव के आगे मोसाद की भी नहीं चल सकी, कैसे इजरायल के हत्या के प्लान से खुद को बचाया?

बढ़ता राजस्थान

तेहरान (एजेंसी)। खामनेई ने एक सीक्रेट ठिकाने पर शरण लेकर खुद को बचाया। बताया जाता है कि युद्ध शुरू होने के बाद खामेनेई का ऐसी लोकेशन पर शिफ्ट हो गए थे, जिसे इजरायली तलाश नहीं सका। युद्धविराम के बाद खामेनेई ने टेलीविजन पर कहा कि ईरान कभी भी अमेरिका और इजरायल के सामने नहीं झुकेगा।

इजरायल के रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज़ ने कहा है कि हाल ही में 12 दिनों के संघर्ष के दौरान ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई हाई टारगेट पर थे। लेकिन भूमिगत होकर उन्होंने हत्या से बचा लिया और यदि संभव होता तो वे उन्हें मार गिराते। लेकिन खामनेई ने एक सीक्रेट ठिकाने पर शरण लेकर खुद को बचाया। बताया जाता है कि युद्ध शुरू होने के बाद खामेनेई का ऐसी लोकेशन पर शिफ्ट हो गए थे, जिसे इजरायली तलाश नहीं सका। युद्धविराम के बाद खामेनेई ने टेलीविजन पर कहा कि ईरान कभी भी अमेरिका और इजरायल के सामने नहीं झुकेगा।

इजरायल के ईरान पर हमले शुरू होने के बाद अली खामेनेई तेहरान के पूर्वोत्तर उपनगर में एक बंकर में छिप गए थे। इस दौरान उन्होंने अपने कमांडरों के साथ सभी इलेक्ट्रॉनिक संचार बंद कर दिए थे। सुरक्षाकर्मी, नजदीकी लोगों और परिवार को ही उनकी लोकेशन की जानकारी थी। फोन और दूसरे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट बंद होने से उनकी लोकेशन को ट्रेस करना तकरीबन नामुमकिन काम था। ऐसे में इजरायल उनको नहीं तलाश सका।

युद्ध के दौरान खामनेई की तलाश की जा रही थी

कई इज़रायली चैनलों पर साक्षात्कार में कैट्ज़ ने दोहराया कि इज़रायल ने पूरे युद्ध के दौरान खमेनेई की सक्रिय रूप से तलाश की। चैनल 13 पर उन्होंने कहा कि हमने बहुत खोज की। उन्होंने आगे कहा कि इज़रायल का उद्देश्य शासन परिवर्तन नहीं था, बल्कि ईरान के नेतृत्व को अस्थिर करना और संघर्ष के दौरान दबाव डालना था। बंकर से अमेरिका को तमाचा, 5 मिनट 9 सेकेंड में खामनेई ने किए चौंकाने वाले खुलासे

हवाई हमलों में टॉप जनरलों को बनाया गया निशाना

13 जून को शुरू हुआ संघर्ष 25 जून को अमेरिका द्वारा मध्यस्थता किए गए युद्ध विराम के साथ समाप्त हुआ। इसमें व्यापक इज़रायली हवाई हमले शामिल थे। इन हमलों में कई शीर्ष ईरानी कमांडर और परमाणु वैज्ञानिक मारे गए। कैट्ज़ ने उल्लेख किया कि इज़राइल ने हवाई श्रेष्ठता बनाए रखी और ईरान के खिलाफ़ प्रवर्तन कार्रवाई की नीति लागू की, जिसका उद्देश्य देश की परमाणु और मिसाइल क्षमताओं के पुनर्निर्माण के प्रयासों को रोकना था।

बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस
दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक समाचार पत्र मुद्रण के लिए संपर्क करें।

उच्च क्वालिटी का कागज एवं स्याही
कलर एवं ब्लैक मुद्रण
किफायती मुद्रण लागत
Printing Press
• Hameedpura Road Khandwa, Newai, Tonk, Rajasthan - 304021
Office
• Badhata Rajasthan, Near Rajkiya Mahavidhyalaya, NH-12, Bypass Newai, Tonk, Rajasthan - 304021
(M) +91-9214048888, Phone No. - 01438-223201, 02, 03
• 185/116, "Pratiksha", Sector-18, Pratap Nagar, Sanganer, Jaipur - 302033
(M) +91-9414242258, Phone No. - 0141-2796795
Email: badhatarajasthanprintingpress@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हमीदपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं राजकीय महाविद्यालय के पास एन एच-12,बाईपास निवाई टोंक (राज.) से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान*।
प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो.नं. 9414242258, 9214048888 टोंक कार्यालय मो.नं. 9414823448 प्रधान कार्यालय :185/ 116 ''प्रतीक्षा'' सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर (राज.) फोन नं.0141-2796794,2796795,
E-Mail-badhatarajasthan@yahoo.com, *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर महानगर होगा)